

छत्तीसगढ़ शासन

Chhattisgarh TRTI
TRIBAL RESEARCH AND TRAINING INSTITUTE

उरांव जनजाति का सरना उत्सव का मोनोग्राफ अध्ययन

आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
नवा रायपुर अटल नगर, छत्तीसगढ़



शासकीय उपयोग हेतु

प्रतिवेदन क्रमांक : 08

छत्तीसगढ़ शासन

सत्यमेव जयते

Chhattisgarh TRTI

TRIBAL RESEARCH AND TRAINING INSTITUTE

उरांव जनजाति का सरना उत्सव

का मोनोग्राफ अध्ययन

निर्देशन : शम्मी आबिदी IAS

प्रतिवेदन : श्रीमती अंजनी भगत

आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान

नवा रायपुर अटल नगर, छत्तीसगढ़



अनुक्रमणिका

अध्याय - 1

1.1 प्रस्तावना -

भारतीय जनसंख्या का कुछ समूह शहरी एवं ग्रामीण सभ्यता से दूर जंगलों, पहाड़ियों, घाटियों, एवं तराईयों आदि क्षेत्रों में निवासरत है। इनकी आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक, तथा स्वास्थ्य संबंधी स्थिति अन्य समाजो के तुलना में पिछड़ी हुई है। जनसामान्य इन्हे आदिवासी, वनवासी, जनजाति, आदिमजाति, आदि नाम से जानते हैं। स्वतंत्रता पश्चात इन्हें समाज की मुख्य धारा से जोड़ने के लिये भारतीय संविधान में अनुसूचित जनजाति का नाम देकर अनुच्छेद 342 के तहत भारत सरकार द्वारा पृथक–पृथक राज्यों के लिये अनुसूचित जनजाति समूह की सूची जारी की गई है। इनके (सामाजिक–आर्थिक) सम्पूर्ण विकास तथा हितों के संरक्षण हेतु भारतीय संविधान में अनेक प्रावधन किया गया है।

01 नवम्बर 2000 को गठित छत्तीसगढ़ राज्य के लिये मध्यप्रदेश पुर्नगठन अधिनियम 2000 के तहत जारी अनुसूचित जनजाति की सूची में कुल 42 जाति समूह को शामिल किया गया है। छत्तीसगढ़ राज्य के लिये जारी अनुसूचित जनजाति के सूची क्रमांक **33 में उरांव, धानका, व धनगढ़ (DHANGAD)** अंकित है। भारत सरकार द्वारा DHANGAD हिंदी अनुवाद धांगड़ स्वीकार कर धनगड़ को अस्वीकृत किया गया है, कुछ क्षेत्र में उरांव की उपजाति धांगड़, धांगर पायी जाती है।



छ.ग. राज्य के सरगुजा संभाग के अन्तर्गत जिला–अम्बिकापुर, जशपुर, रायगढ़, आदि, बिलासपुर संभाग के जिला–बिलासपुर, कोरबा, जांजगीर–चांपा, एवं नव निर्मित दुर्ग संभाग के जिला– राजनांदगांव में उरांव जनजाति निवासरत है। छ.ग. राज्य की कुल जनसंख्या 25545198 है (जनगणना 2011) जिसमें अनुसूचित जनजाति की 78,22,902 (30.6 प्रतिशत) है तथा दशकीय जनसंख्या वृद्धिदर (2001–11) 18.2 प्रतिशत पायी गयी है और लिंगानुपात 999 थी।

वर्ष 2001 की जनगणनानुसार छत्तीसगढ़ राज्य में उरांव जनजाति की जनसंख्या 645950 है जो कुल जनसंख्या का 9.76 प्रतिशत है।

1.2 अध्ययन के उद्देश्य -

1.2.1 : उरांव जनजाति के धार्मिक पर्व सरना उत्सव/खद्दी का मोनोग्राफ अध्ययन करना।

1.2.2 : उरांव जनजातीय समाज की धार्मिक सांस्कृतिक पहलु में मुख्य रूप से पूजा–पाठ, साज–श्रृंगार एवं नाच–गान का अध्ययन करना।

1.2.3 : उरांव समाज की धार्मिक संस्कृति सरना उत्सव/खद्दी पर्व के समस्त पहलुओं का अध्ययन करना।

1.3 अध्ययन का महत्व -

1.3.1 : जनजातीय धार्मिक संस्कृति का संरक्षण किया जा सकेगा।

1.3.2 : जनजातीय संस्कृति की जानकारी प्राप्त हो सकेगा।

1.3.3 : जनजातीय संस्कृति अनुरूप विकासीय योजना को इनके द्वारा सहजता से अपनाया जा सकेगा।

1.4 अध्ययन प्रविधि -

जशपुर जिला में खद्दी पर्व का अध्ययन किया गया।

प्राथमिक तथ्यों के संकलन के लिए उद्देश्य निदर्शन पद्धति से उरॉव बहुल्य ग्रामों का चयन किया गया। चयनित ग्रामों में लगभग 100 परिवार निवासरत है। खद्दी पर्व के दिन प्रत्यक्ष उपस्थित होकर साक्षात्कार लिया गया। समूह साक्षात्कार में न केवल पुरूष बल्कि महिलाओं को भी शामिल किया गया। आवश्यकतानुसार समूह साक्षात्कार का फोटोग्राफी भी किया गया।

द्वितीयक तथ्यों के रूप में विषय से संबंधित प्रकाशित पत्र, पत्रिकाओं, साहित्यों, शोध, आलेख, षोध पत्र, जनगणना प्रतिवेदन, शासकीय प्रतिवेदन एवं समाज द्वारा प्रकाशित जातिगत बुक आदि का अध्ययन/उपयोग किया गया।

आवश्यक तथ्यों का संकलन कर विश्लेषण करके सरना उत्सव/खद्दी पर्व का प्रतिवेदन लेखन किया गया है।



खद्दी पूजा करवाता बैगा

1.5 उरांव जनजाति की उत्पत्ति -

उरांव जनजाति की उत्पत्ति के संबंध में कोई ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है किन्तु इनमें प्रचलित किवदंतियों एवं लोककथाओं के आधार पर इनकी उत्पत्ति निम्नानुसार है।


सरना का पूजा स्थल

एक दिन भगवान शंकर शौच हेतु लोटा पकड़ कर निकले परन्तु शौच निवृत हुए बिना ही घर लौट आये, लोटे का पानी भरा देख माता पार्वती ने कारण जानने का प्रयास किया। परन्तु भगवान शंकर बात टाल दिये। यह घटना कई दिनों तक चलती रही। इससे परेशान होकर भगवान शंकर ने एक दिन माता पार्वती से चर्चा करने के लिए उन्हें अपने पास बैठाया और समस्या का बखान करते हुए कहने लगे कि धरती में जीव–जन्तु की जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि हो गयी है और मैं किसी को नाखुश व दुख में नहीं देख सकता, और तो और इतनी जनसंख्या वृद्धि हो चुकी है कि शौच के लिये भी जगह शेष नहीं रह गयी है। मैं कई दिनों से इस परेशानी से गुजर रहा हूं कुछ उपाय बताइयें ?

बहुत देर तक वार्तालाप करने के पश्चात भगवान शंकर ने माता पार्वती के पास यह प्रस्ताव (विचार) रखा की, क्यों न धरती को जल/अग्नि मग्न किया जाय जीव–जन्तु की जनसंख्या में कमी किया जायें, यह सुनकर माता पार्वती ने कहा नहीं यह संभव नहीं है। भगवान शंकर ने पूछा क्यों तब माता पार्वती ने कहा ऐसा करने से हमारा अस्तित्व भी खतरे में आ जाएगा, क्योंकि मानव द्वारा चढ़ाए जाने वाले भोग ही हमारा मुख्य आहार हैं, यदि एक भी जीव–जीवित न रहेगा तो हमारा जीवन संभव कैसे हो सकेगा, इसी वाद–विवाद के पश्चात यह निर्णय हुआ कि क्यों न आधी धरती अग्निमय कर दिया जाय, जीव–जन्तु की संख्या कम किया जायें? जिससे दोंनो समस्यों का समाधान निकल आयेगा। निर्णयानुसार योजना बनायी गयी की आधी धरती जब जल जाये तो आग बुझा दिया जाए। आग बुझाने का कार्य भगवान ने भांजा हनुमान जी को सौंपा और उन्हें नागाड़ा सौपते हुए यह चेतावनी दी कि आधी धरती जब जल जायें तो यह नागाड़ा बजा देना जिससे आग बुझ जायेगी। आदेशानुसार दूसरे दिन भगवान हनुमान सुबह बासी खाना खा कर नागाड़ा ले कर एक वृक्ष के चोटी में जा चढ़े जहां से पूरी धरती दिखाई देती है पवनपुत्र चोटी मे बैठकर आधी धरती जलने का इन्तजार करते–करते सो जाते है। योजनानुसार भगवान शंकर ने सुबह धरती में आग लगा दिया। सुबह से दोपहर हो गया परन्तु आग नहीं बुझा दोपहर के बाद धीरे– धीरे आग हनुमान की ओर बढ़ने लगा अंततः उस पेड़ तक जा पहुंचा जहां हनुमान जी बैठे हुए थे, हनुमान जी आश्चर्य से जागे क्योंकि वे आग की लौ में झूलस रहे थे जागते ही उन्होने नगाड़ा बजाया और आग बुझ गयी किन्तु तब–तक पूरी धरती जल कर राख हो चूकी थी।



कंकड़ो (केकड़ा) लाता (खोह)

शाम को तीनों घर पहुंचे तब पता चला की सारी धरती जल चुकी है। अगले दिन माता पार्वती भगवान शंकर से कहती है कि खाना बनाने के लिये अनाज लाये क्या ताकि खाना पकाया जा सके। भगवान धरती पर भ्रमण के लिये निकलते थे परन्तु खाली हाथ घर लौट आते हैं यह घटना कई दिनों तक चलती रही तब एक दिन माता पार्वती लाख का खाना बना कर भगवान शंकर को परोस दिया भगवान जैसे ही खाने के लिये थाली से निवाला उठाने की कोशिश की हाथ में लाख चिपक गया, और हाथ में जलन भरी दर्द होने लगा। इससे निजात पाने हेतु भगवान हाथ को झटकारने लगे झटके के फलस्वरुप जहां–जहां लाख धरती पर गिरी वह लेट्टो पत्थर में परिवर्तित होती गयी। ऐसा खाना देख भगवान परेशान हो गये और माता पार्वती से अन्न का खाना देने हेतु कहने लगे तब माता पार्वती ने कहा धरती पर एक भी मानव नहीं है इस कारण दान–चढ़ावा भी बंद हो गया है तो अन्न का खाना कहां से बना कर खिलाऊँ। यह सुन कर भगवान शंकर परेशान हो जाते है और अगले दिन मानव की तलाश में धरती की ओर निकल पड़ते है। कई दिनों के तलाश के पश्चात भी निराशा ही हाथ लगती है। थक–हार कर जब भगवान शंकर घर आकर माता पार्वती को सारा वृतांत बताते है तब शरारतवश माता पार्वती पुनः प्रयास हेतु आग्रह करती है और भगवान मानव तलाश के लिये निकल पड़ते है किन्तु निराशा ही हाथ आती है यह सिलसिला कई महिनो तक चलता रहा तब जाकर एक दिन माता पार्वती ने कहा क्या आप ने ''**सिरी-सिता की नाला गंगला ही खाईड**'' जाकर **कंकड़ो (केकड़ा) के खोह** में देखो।

अगले दिन घूमते–घूमते उस स्थान पर पहूँच गये जहां का बखान माता ने किया था किन्तु मानव नजर नहीं आये, शाम को वापस आने पर माता ने पूछा कोई नहीं मिला क्या? दूसरे दिन भगवान अपनी



धरम कण्डो

लिली–भूली, खैरी खुटी अल्ला (लिली–भूली नाम की भूरे रंग का कुत्ता) के साथ पुनः उसी स्थान पर जा कर इधर–उधर सभी ''लाता'' (केकड़ा का घर) में दौड़ लगाने लगे यह धमा–चौकड़ी देख मानव गुफा से बाहर निकल कर दूसरी ओर भागने लगे उन्हें देखकर कुत्ता दोनों को दौड़ाकर पकड़ लिया यह देख भगवान ने मानव बच्चे से कहा आओ मेरे पास मैं तुम्हीं को ढूढ़ रहा हूँ। इस प्रकार भगवान ने उन्हे अपने दांये कंधे पर पुरुष और बांये कंधे पर स्त्री को बैठाकर घर लाये । दो मानव बच्चो को देख माता ने कंचन की थाली निकाल उनके पैर उस पर रखकर उनका पाव पखारने लगी तत्पश्चात् उनके लिये दाल–चावल व खीर पकाया और उन्हे खिलाया इसके बाद हड़िया पानी से स्वागत किया।

कुछ समय विश्राम पश्चात् दोनो (माता पार्वती व भगवान शंकर) यह विचार करने लगे कि इन मानव बच्चों को धरती पर कहां स्थान (जगह) दिया जाये। इसी बीच महादेव ने कहा क्यों न मैं इन्हे जंगल में जगह प्रदान करूं ताकि ये बच्चे कुछ काम करना सीख जाए यह कहकर वे दोनों को लेकर जंगल ले जाकर ''बेवरा'' (खेत) काटना सिखाया अर्थात पेड़ काटकर खेत बनाने की विधि सिखाया। कई दिन बाद जब महादेव ने उन बच्चो से पुछा यह लकड़ी कब काटी तो जवाब मिला आज दूसरे दिन जब वे दोपहर का खाना लेकर गये तब खाना खाने के बाद पुनः पूछा यह लकड़ी कब काटे तो मानव ने कहा आज। इस प्रकार के जवाब के फलस्वरुप पार्वती–महादेव ने ''दिन–रात'' का समय बनाया और दोनों बच्चो को समझाया कि जब तक **बीड़ी बेलास** रहेगा, या दिखाई देगा उजाला होगा तब वह समय दिन का होगा और जब बिड़ी बेलास (सूर्य भगवान) न दिखे या अंधेरा होगा तो समझ जाना की रात है। दिन–रात का समय बनाने के पश्चात् दूसरे दिन जब महादेव ने खाना पश्चात् पूछा कि यहां बेवरा कब बनाया तब बच्चों ने कहा कल। दूसरे दिन पुनः महादेव

ने पूछा यह काम कब किया गया है तो जवाब में बच्चों ने कहा आज यह देख–सुन कर भगवान घर वापस आकर माता पार्वती से वर्तालाप में कहते है कि आज बच्चों ने सही–सही जवाब दिया है, हमारा काम सही दिशा में हो रहा है। इसी प्रकार महादेव ने अगले दिन बच्चों को एक गड्डी (नाले) में बांध बाधने को कहा और उसके मेंड़ पर एक लउवा का बीज (लवकी) दे कर उसे रोपने को कहा। अंकुरीत हो कर पौधा (लता) तैयार हुआ तथा फल पक कर तैयार हुआ तो उसे फाड़कर देखा तो उसमें सभी प्रकार के अन्न बीज थे। इसमें से सभी बीजों को छांट कर पृथक पृथक (दाल–चावल–तिलहन आदि) कर उसे बोना (कृषि करना) सिखया। बोने के बाद पौधों को अनेक प्रकार के कीड़े–मकोड़े उसे नष्ट करने लगे तब महादेव ने उससे निजात पाने हेतु ''पलकांसना'' (किडें मकोडे को दूर करने हेतु पूजा) का तरीका बताया।



ककड़ो लाता का पूजा करता उरांव पुरूष

लऊवा में एक बीज ''लज्जे खंजपा'' (शर्म का पहचान कराने वाला फल का बीज) था जिसे भगवान ने बच्चों को खाने से मना किया था एक दिन एक ''नाद'' (शैतान) आया और उन दोनों को लज्जे खंजपा खाने हेतु प्रलोभित करने लगा। प्रलोभन में आकर दोनों ने वह फल खा लिया खाने पश्चात् उन्हें प्यास लगी प्यास में दोनों पानी पीने कुंआ के पास गये, पीने कें बाद इन्होने यह देखने का प्रयास किया कि पानी कितनी गहराई में है, यह देखते हुए उन्हे अपना प्रतिविम्ब दिखाई दिया तब उन्हे पता चला की वे नग्नावस्था में है। इसी समय महादेव उनके लिए खाना लेकरे आये, महादेव को देख कर बच्चे दूर भागने लगे। यह देख महादेव वापस घर जाकर सारा वृतांत माता पर्वती को बताया कि हमारे बच्चों को नाद लज्जे खंजपा को खिलाने में सफल हो गया है। इस प्रकार महादेव ने बच्चों को अपनें पास रखने हेतु वस्त्र का निर्माण किया और उन्हें वस्त्रों से तन ढकने को सिखाया। उरांव समुदाय इन्ही को अपना पूर्वज व अपने को उनका वंशज मानती है।

1.6 उरांव जनजाति का इतिहास -

उरांव जनजाति की उत्पत्ति (उद्भव) स्थान के संबंध में वैज्ञानिक एकमत नहीं हैं। उरांव जनजाति की उत्पत्ति स्थान को लेकर अधिकांश वैज्ञानिक इन्हें द्रविड़ जाति का मूल वंशज और मूलतः दक्षिण भारत निवासी मानते हैं। इनकी बोली में तमिल और कनारी भाषा के शब्दों की बहतायत है। संभवतः इन्हें ही ध्यान में रखते हुए, गेट ने 1901 की अपनी जनगणना की रिपोर्ट में यह संभावना व्यक्त की थी कि उराँव मूलतः कर्नाटक क्षेत्र के निवासी थे। उनका अनुमान था कि इस समूह के पूर्वज पहले कर्नाटक से नर्मदा उपत्यका (घाटी, तराई) में आए और वहाँ से बाद में बिहार राज्य के सोन तट के भागों में आकर बस गए।

''**उरांव सरना: धर्म और संस्कृति**'' नामक पुस्तक में श्री भीखू तिरकी ने पृष्ठ क्रमांक 335 में हड़प्पा, मोहनजोदड़ो और हल्दीघाटी की खुदाई में मिले संगीत और सांस्कृतिक अवशेषों के आधार पर उरांव जनजाति का जन्म भूमि (प्रादूर्भव) होना बताया है। इस क्षेत्र में पंजाब की पांचों नदियों का बहाव था अर्थात यहां की भूमि उपजाऊ थी जिसमें यह जनजाति कृषि उपज कर जीवन–यापन करती थी। आर्यो के आगमन पश्चात् दोनों में लड़ाई हुई और इस लड़ाई में उरांव जनजाति हार गई। इसके पश्चात् यह जनजाति अपनी क्षेत्र भूमि छोड़कर कुडूख़ क्षेत्र (कुरुक्षेत्र) में जा बसे। कुरुक्षेत्र में जीवन यापन करने लगे किंतु महाभारत की लड़ाई के कारण यहां से भी अन्यत्र पलायन करना पड़ा। समुद्र किनारे होते हुए कई क्षेत्रों को पार करते हुए मद्रास (चेन्नई) प्रदेश में जा बसे किंतु यहां से भी उन्हें पलायन होना पड़ा और यह जनजाति नर्मदा, यमुना और गंगा नदियों को पार करके आजमगढ़ (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र को अपने निवास क्षेत्र बनाया। तब इनकी राजधानी **हरदी नगर और पिपरागढ़ (उत्तर प्रदेश)** हुआ करता था इस समय इनका प्रभाव पटना और शाहाबाद (उत्तर प्रदेश, भोजपुर) में कर्मनाशा नदी तक रहा।



नमन करता उरांव पुरूष

उरांव जनजाति स्वंय को ''कुडुख'' कहते है यह जनजाति सरकारी काम काज में उराँव नाम से अभिज्ञापित है। कुडुख शब्द में उरांव जनजाति का गौरवमय इतिहास अनुस्पूत है। कुडुख देश के राजा कुडुख (करूष) के वंशज तथा कोडकाई के प्राचीन पांड्पा राज्य के कन्नड़ भाषियों के रक्त संबंधी इस कुडुख जनजाति ने जब छोटा नागपुर प्रदेश में प्रवेश किया तो ये आर्यों से संपर्क के कारण धातु के बर्तनों, औजारों एवं फारदार हल का प्रयोग करने लगे थे। नमर्दा नदी के तट से रोहतासगढ़ तक की शताब्दियों की लम्बी यात्रा के मध्य इस जनजाति ने कंद–मूल एवं पशु–धन को महत्व देने लगे थे यह उस जीवन यात्रा के बीच की अवस्था थी जब एक जगह टिक कर कृषि–कर्म अपनाना इनकी सामाजिक प्रकृति के अनुरुप नही था। नर्मदा तट से रोहतासगढ़ (वर्तमान झारखण्ड प्रदेश) सहस्त्रों वर्षो की यात्रा के क्रम में उरांवों ने न केवल उन्नत रीति से खेती करना सीख लिया था। बल्कि साथ ही अपने जीवन में उन खान–पान, रीति–रीवाज व विश्वासो को अपना लिया था जो आर्यो के संपर्क से उन्हें प्राप्त हुआ। उरांव समुदाय कुछ समय बाद शाहाबाद (भोजपुर) क्षेत्र में प्रवेश किया। आर्यो के कारण इन्हे शाहाबाद छोड़ना पड़ा। कुछ समय तक रोहतासगढ़ के पठारी इलाको में आश्रय लिये तत्पश्चात इन की राजधानी रोहतासगढ़ बनी। रोहतासगढ़ के शासन काल तक यह जनजाति उरागन ठाकुर कहलाते थे इसी उरागन श्ब्द से ही कुड़ूख़ जाति का नाम उरांव पड़ा ''श्री भीखू तिरकी''। ''संत पडरू राम'' ने भी अपनी किताब में लिखा है कि छोटा नागपुर में उरांव जनजाति का दो हजार साल तक शासन रहा। इस किताब के अनुसार उरांव उरमाल क्षत्रिय (ठाकुर) कहलाते थे। फिर छोटानागपुर की ओर बढ़ गए, रोहताशगढ़ छोड़ते समय ये दो दलो में बट गये, एक दल गंगा की तटवर्ती इलाके से गुजरता हुआ राजमहल के पहाड़ी इलाको में पहुँचा और सिमडेगा होते हुए उड़िसा राज्य के


साल का पूजा अर्चना करता उरांव समुदाय

राउरकेला, सुंदरगढ़, सम्भलपुर और झारसुगड़ा जिला में जा बसे। दुसरा दल कोयल नदी की तटवर्ती मैदानो से होता हुआ पलामु (बिहार) क्षेत्र में प्रवेश किया। कुडू और चंदवा क्षेत्र से लोहरदगा गुमला चौनपुर महुआडांड़, डुमरी होते हुए यह जनजाति छत्तीसगढ़ के जशपुर सरगुजा, बलरामपुर अंबिकापुर और रायगढ़ जिले में आ बसे।

रोहतासगढ़ में आर्यो से पराजित होकर ये क्रमशः छोटानागपुर पहुंचे, जहां उनका सामना मुण्डाओं से हुआ। मुण्डा उरांव की तुलना में तकनिकी ज्ञान, औजार एवं कृषि कर्म में काफी पिछड़े हुए थे परिणाम स्वरूप मुण्डा जाति को पूर्व व दक्षिण दिशा की ओर पलायित होना पड़ा। उरांव उस क्षेत्र (छोटानागपुर का पठार या बिहार राज्य के पलामू व रांची क्षेत्र) में बस गए और अबादी की वृद्धि के साथ–साथ जीवन निर्वाह हेतु जंगलो को काट कर उन्होंने कृषि व आबादी क्षेत्र का क्रमशः पर्याप्त विस्तार किया। इसी क्रम में आबादी के वृद्धि के फलस्वरूप ये धीरे–धीरे पलायीत होते हुए जीवीकोपार्जन के लिए छत्तीजगढ़ राज्य में आ बसे। छ.ग. राज्य की उरांव जनजाति मुख्य रूप से पलामू (बिहार) वर्तमान झारखण्ड राज्य से यहां आ कर बसा हुआ अनुसूचित जनजाति है। इस संदर्भ में उरांव के लोकगीतों में भी उल्लेख किया जाता है कि उरांव पलामू जिले के निवासी थे। उरांव आर्यों की तुलना में कृषि तकनीकी व युद्ध कौशल में पीछे थे परन्तु मुण्डाओं की तुलना में वे उच्च थें। आर्यो के सम्पर्क के कारण यह जाति लड़ाकू एवं वीरता की गुण अपनें में विकसित कर लिया था किन्तु



खद्दी पूजा करता उरांव पुरूष

इनमें हड़िया पीने (राइस बीयर) की बड़ी बुरी आदत थी। घर व खेतों का कार्य मुख्यतः स्त्रियां ही करती थी पुरूष सिर्फ शत्रुओं से लड़ाई करता था एवं खाली समय में शराब (राइस बीयर) पीने मे व्यस्त रहता था। मुसलमान बादशाह इस स्वतंत्र एवं वीर जाति को अपने अधीन करने के लिए इन पर आक्रमण किया किन्तु पहाड़, जंगली एवं पठारी, उंची नीची घाटियों के कारण उरांव अपने तीरों की मार एवं गोरिल्ला युद्ध से उन्हे परास्त कर दिए। हारे हुए मुसलमान सिपाही सोच में पड़ गये उसी समय एक फकीर जो मुखबीर का कार्य करता था। मुसलमान सेना को बताया कि अभी उरांवों पर आक्रमण करना उत्तम होगा क्योंकि वे विजय बेला की खुशी मे हड़िया पीकर बेहोश पड़े है। मुसलमान सैनिकों ने उरांवों पर पुनः आक्रमण कर दिया किन्तु उरांव सेना की सनसनाती तीर से उनके हौसले पस्त हो गये। सेनापति मुखाबीर से बड़ा नाराज हुआ तथा उसे बूढ़ा एवं भला–बुरा कहा। मुखबीर ने कहा कि आप लोग स्वयं कायर हो अभी भी उरांव पुरूष नशें में है जिनके तीरों के मार से परास्त हुए हो वो तीर चलाने वाले पुरूष की वेश में नारियां है। मुसलमान सैनिकों को धिक्कार है जो उरांव स्त्रियों का मुकाबला नहीं कर सकें। सैनिकों ने पूछा की स्त्री और पुरूष की पहचान क्या है। मुखबीर फकीर ने बताया कि यदि व्यक्ति एक हाथ से मुंह धोये तो समझो पुरूष है यदि दोंनो हथेलियों में पानी लेकर मुहं धोये तो समझो स्त्री है। मुसलमान सैनिकों को विश्वास हो गया कि उरांव पुरूष अभी भी नशें में है अतः बड़े जोश के साथ उन पर पुनः आक्रमण कर दिया। इधर उरांव स्त्रियां भी असावधान हो गई थी, अचानक हमले से वे भी घबरा गई और चारों ओर हाहाकार मंच गया बहुत से उरांव मारे गये जो बच गए थे वे छोटा नागपुर की ओर प्रस्थान कर गये।

इस प्रकार उरांव जनताति का पलायन क्रम अपने जन्म भूमि हड़प्पा से उद्भव हो कर मद्रास (चेन्न्ई) के समुद्र तट से होते हुए महाराष्ट्र–उत्तर प्रदेश–बिहार–झारखण्ड से होते हुए छत्तीसगढ़ तक आगमान रहा।

भारत में मुगल शासन काल के पश्चात् ब्रिटिश हुकुमत का राज आया। ब्रिटिश हुकुमत ने शासन बनाये रखने के लिए भारत वासियों को अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास किया जिसमें सर्वप्रथम जनसुमदाय को धर्मान्तरण हेतु प्रोत्साहित कर **ईसाई धर्म** अपनाने का था। धर्मान्तरण फलस्वरूप समकालीन सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व जाति व्यवस्था में व्यापक बदलाव आया। ब्रिटिश हुकुमत की धर्मान्तरण अभियान से उरांव समुदाय सर्वाधिक प्रभावित हुआ और कालांतर में यह दों भागो में विभक्त हो गया पहला– संसारी या सवसरिया उरांव दूसरा ईसाई या मिशनरी उरांव लगभग 40 प्रतिशत उरांव लोगों ने ईसाई धर्म को अपनाया है तथा उरांव जनजाति क्षेत्रों में हिन्दू संगठनों द्वारा घर वापसी कार्यक्रम अन्तर्गत धर्मान्तिरित ईसाईयों को पुनः हिन्दू धर्म अपनाने प्रेरित किया जा रहा है। धर्मान्तिरित ईसाई उरांव अपना गोत्रनाम पुर्ववत रखते है। इस प्रकार उरांव समुदाय समय–समय पर अलग–अलग भागों (समूह) में विभक्त होता रहा है।



शहरों में सरहुल पूजा करता उरांव समुदाय

ब्रिटिश हुकूमत व्यापार के लिए भारत आए थे, बाद में भारत के शासक हुए। व्यापारी होने के कारण यह बिहार के बगहा बेतिया और फारबिसगंज में नील की खेती करना शुरू किया। जिसमें मजदूरों की अवश्यता पड़ी तब ब्रिटिश हुकूमत ने उरांव जनजाति के लोगों को मजदूरी के लिए बगहा बेतिया और फारबिसगंज ले कर वहीं बसा दिया। जनसंख्या वृद्धि के फलस्वरूप जीवोकोपार्जन के लिये उरांव जनजाति यहां से नेपाल की तराई विराटनगर और फरान की में जा बसे। कुछ समय पश्चात् ब्रिटिश हुकूमत चाय की खेती करना शुरू किया जिसमें भी उरांव जनजाति के लोगों को मजदूरी के लिए लिया गया, जिसके कारण उरांव जनजाति बंगाल की सिलीगुड़ी, जलपाईगुड़ी, हसिमारा, बीचबगान और असम भूटान के चाय बागान में भी बसाये गए हैं। स्वतंत्र भारत में आदिवासियों को सरकारी कामकाज (नौकरी) में आरक्षण प्राप्त होने के कारण उरांव जनजाति के लोग सरकारी कामकाज के निष्पादन लिए लगभग भारत के सभी राज्यों में जीविकोपार्जन करने लगे हैं और वहीं पर बसने भी लग गए हैं।



सरहुल पूजा ग्रहण करती उरांव बैगीन

1.7 कुडुख शब्द का उद्‌भव -

कुडुख शब्द इस जनजाति की मिथक कथाओं में आने वाले राजा करूष से उद्धवित माना जाता है। जिनके द्वारा बसाया गया करूष देश रीवां से बिहार के मगध तक फैला हुआ था जिसमें शाहाबाद केन्द्रीय स्थान था। कुडुख शब्द के संबंध में विद्वनों का मत निम्न है–

1. "इ.ए. गैट के अनुसार" कुडुख शब्द प्राचीन द्रविड़ भाषा का मूल शब्द है, जिसका अर्थ मनुष्य होता है और यह शब्द कुडुख राजा से एक आकार निर्माण कर उरांवों ने उसे ही अपना जनक लगभग उसी प्रकार माना है जिस प्रकार मनु से मानव का जन्म हुआ।
2. "रेपरेण्ड डॉ. एफ हन" ने कुडुख व्याकरण की भूमिका में कुडुख शब्द को मुण्डाओं के होरो के समान माना है। इसका अर्थ मनुष्य से लगाया है।
3. डॉ हन ने इस शब्द की व्युत्पत्ति द्रविड़ सीथिपन मूल के शब्द "कुडुख" से माना है।
4. डाल्टन ने "कुडुख" शब्द को "कोंकेन" से अपभ्रंशित माना है। इनके अनुसार इस जनजाति का मूल निवास स्थल कोंकण था।
5. डॉ. ग्रिगर्सन ने "कुडुख" शब्द की व्युतपत्ति द्रविड़ शब्द "करूग" से माना है। करूग का अर्थ चील है जो उरॉवों के एक वंश का टोटम है। इनके अनुसार इसी टोटम के अन्तर्गत क्रमशः उरांव जनजाति "कुडुख" नाम से अभिज्ञापित हुई।

कतिपय विद्वानों का मत है कि उरांव कहे जाने वाले इस जनजाति की मुख्य व्यवसाय कृषि था, अतः वे कृषक–कुरूग–कुडुख कहलाए। इस प्रकार कुडुख संबोधन उरांव जनजाति के लिए विभिन्न संदर्भो में सार्थक है।

1. प्रथम सार्थकता इनके परम्परागत उस इतिहास के संदर्भ में है जो इन्हें "कुडुख" देश का निवासी बतलाया है जिसके फलस्वरूप मे "करूष" या "कुडुख" कहलाए।
2. द्वितीय सार्थकता के अनुसार परम्परा का जनक राजा "करूष" के संदर्भ में है कि जिस प्रकार "मनु" से मानव हुए उसी प्रकार "करूष" से कुडुख हुए जिसका अर्थ मनुष्य से है।
3. तीसरी सार्थकता इनके कृषक व्यवसाय की है। कतिपय विद्यानों का मानना है कि इनके पड़ोसियों ने इनको "कृषक" कहना प्रारभ किया जो कलांतर में अपभ्रंशित होते हुए "कुडुख" हो गया। कुडुख बोली में अनुनासिक स्वभाव के कारण "र" का उच्चरण "ड़" व "ष" का "ख" होता है। ऐसे उच्चारण के फलस्वरूप अपभ्रंशित होकर करूष से "कुडुख" शब्द प्रचलित हुआ।

1.8 उरांव शब्द की उत्पत्ति -

किवदंति अनुसार सर्व प्रथम महादेव ने जंगल में लकड़ी औऱ पौधों को काट कर "बेवरा" बनाना सिखाया जिसमें कृषि उपज उत्पन्न कर जीवोकोपर्जन करते थे। कलान्तर में जीव–जन्तुओं व आबादी की वृद्वि के फलस्वरूप जंगलों की कमी होने लगी और "बेवरा" बनाने मे परेशानी होने लगी तब पूर्वज बड़े



पेड–पौधों के स्थान पर उराई (घास) काट कर कृषि करने लगे। उराई का सफाई कार्य करके कृषि उपज से जीवन निर्वाह करने लगे। कई पीढ़ी तक यह कार्य चलता रहा और व्यवसाय के रूप में परिवर्तित हो गया, पेशा के आधार पर जनसमुदाय या पड़ोसी समूह इन्हे उरांव पुकारने लगे और इनकी जाति उरांव कहलाने लगी।

रोहतासगढ़ के शासन काल तक यह जनजाति उरागन ठाकुर कहलाते थे, इसी उरागन श्ब्द से ही कुडुख जाति का नाम उरांव पड़ा। (श्री भीखू तिरकी)। वर्तमान में उरांव जनजाति को एक कृषक समुदाय के रूप मे भी नामांकित किया जाता है।



1.9 उरांव जनजाति में पाये जाने वाले उपनाम -

उरांव जनजाति द्वारा अपना सरनेम/टाइटल क्षेत्र अनुसार अलग–अलग लिखा जाता है। जो निम्नानुसार है–

1. छोटा छोटा नागपुर से बाहर पूर्णिया, कटिहार, फारबिसगंज और मोतीहारी के बेतिया तथा बहरा क्षेत्रों में बसे उरॉव जनजाति अपना सरनेम "धांगर" लिखता है धांगर शब्द का अर्थ कुरुख बोली में दूसरों के यहां काम करने वाला मजदूर होता है।
2. छोटा नागपुर के गांवों में उरांव शासक या मुखिया होता हैं, और उस गांव का महतों कहलाता है। शासक व मुखिया परिवार अपना सरनेम महतो लिखता है। इसी प्रकार गांव का पुजारी या पहान परिवार अपना टाइटल पहान लिखता है।
3. कुछ उरांव समुदाय व्यापार के लिए अन्यत्र गए और अपना सरनेम मोदी रखा, जो आज भी लिखा जा रहा है। मोदी सरनेम के उरांव समुदाय जत्रा, रांची रोड लटमा और बगरा मोड़ के आसपास बसे हुए हैं।
4. मध्य प्रदेश–छत्तीसगढ़ राज्य के उरांव समुदायों द्वारा अपना टाइटल राम व भगत लिखा जाता है।
5. उड़िसा राज्य के उरांव जनजाति अपना टाइटल ओराम या ओरांव लिखा जाता हैं।
6. छोटा नागपुर के बाहर कुछ उरांव समुदायों द्वारा अपना सरनेम मोंडोल लिखा जाता है, जिसका अर्थ धनवान होता है।
7. कुछ उरांव समुदायों द्वारा सरनेम के लिये सरदार शब्द का भी उपयोग किया जाता है।
8. वर्तमान में उरांव जन समुदायों द्वारा अपना टाइटल उरांव, गोत्र नाम–लकड़ा, बरवा, टोप्पो, कुजूर, पन्ना, किस्पोट्टा, केरकेटा आदि के साथ ही निराला, नीरज, पंकज, राम, भगत लिखे जाने लगा है।

अध्याय - 2

2.1 धार्मिक जीवन -

उरांव जनजाति के परम्परागत धार्मिक विश्वास के विविध रूप होते हैं यथा जीववाद, टोटमवाद, पूर्वज आदि। परम्परागत उरांव धर्म का नाम ''**सरना धर्म**'' है। इनके मुख्य देवता सूर्य हैं जिसे ''**बीड़ी बेलस**'', धर्मेस आदि नामों से पुकारा जाता है। सूर्य के अलावा नदी, पर्वत, पृथ्वी, वृक्ष, पत्थर, सरना, आदि को भी देवी–देवता के रूप में पूजा जाता हैं।

उरांव जाति की परम्परागत धार्मिक विश्वास या जीवन पर इतिहासानुसार इनके धर्म पर सर्वप्रथम ईसाई धर्म का प्रभाव सर्वाधिक हुआ। सर्वप्रथम बेपलिस्ट ईसाई मिशनरी का प्रवेश पूर्वी अंचल में 1819 में हुआ। भारत में पूर्वी क्षेत्र जिसमें असम, मेघालय, त्रिपुरा, मणिपुर, नागालैण्ड, मिजोरम, अरूणाचल प्रदेश, बिहार का छोटा नागपुर (झारखण्ड एवं छ.ग.), बंगाल एंव उड़ीसा, मध्य प्रदेश ब्रिटिश हुकुमत की जनजातीय आबादी में धर्म प्रसार की गतिविधि का मुख्य केन्द्र था। असम राज्य में अंग्रेजों का अधिकार 1856 से माना जाता है। असम की तत्कालीन राजधानी शिवसागर को केन्द्र बनाकर इसाईयत का प्रचार प्रारंभ किया गया। धीरे–धीरे इन क्षेत्रों में इनकी जड़े जमने लगी। एक प्रतिवेदनानुसार 1886 ई. तक मात्र 845 आदिवासी ईसाई धर्म को स्वीकार किये गए थे। वर्ष 1900 में इनकी संख्या 2614, 1940 में 24000 हो गयी। नागालैण्ड में 1886 तक 41 नागा ईसाई धर्म अनुयायी थे जो 1940 तक 40000 में परिणित हो गये।



साल वृक्ष

बिहार, उड़ीसा, बंगाल एवं मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड के आदिवासी अंचलों में धर्मान्तरण का केन्द्र बिन्दु रांची था। वर्ष 1845 में जर्मन ईवन्जीलिकल लूथरन अर्थात बर्लिन के गोसनर्स मिशन का पदार्पण हुआ। इनका प्रारंभिक कार्य धर्मान्तरण रहा परन्तु इन्हें सफलता नहीं मिली। वर्ष 1883 में इस कार्य में गति आयी और आदिवासियों में धर्मान्तरण की होड़ मच गयी धर्मान्तरण का मुख्य कारण तत्कालीन जमींदारों का आतंक, शोषक एवं बेगार से त्रस्त होना। इस क्षेत्र में सर्वाधिक प्रभावित जनजाति में उरांव एवं मुण्डा थी। तत्कालीन समय में लगभग 60 प्रतिशत परिवार ईसाई धर्म स्वीकार कर चुका था। कहीं–कहीं पूरा का पूरा गांव धर्मान्तरित हो गया। छत्तीसगढ़ के रायगढ़, सरगुजा, एवं जशपुर जिला इन गतिविधियों से सर्वाधिक प्रभावित हुआ।

ब्रिटिश शासनकाल में इन गतिविधियों को फलने–फूलने के अवसर थे परन्तु भारत की स्वतंत्रता के बाद भी इनमें कमी नहीं आयी। धर्म निरपेक्ष भारत में निर्बाध रूप से यह कार्य केवल चालु नही रहा वरन इनमें

गति भी आयी। स्वतंत्र भारत की पहली जनगणना वर्ष 1941 में हुई इसके प्रारंभिक 10 वर्षों में (1941 से 1951) के बीच ईसाई जनसंख्या की वृद्धि बहुत अधिक हुई।

अविभाजित मध्यप्रदेश राज्य के आदिवासी क्षेत्रों में वर्ष 1961 से 1971 तक के आंकड़ों का विश्लेषण भी ईसाई धर्मावलम्बी जनजातियों की जनसंख्या में कुल आदिवासी जनसंख्या वृद्धि दर की तुलना में कई गुना अधिक दर्शाता है। वर्ष 1961 में म.प्र. की कुल 11 जिलों में ईसाई जनसंख्या निवासरत थी। छत्तीसगढ़ राज्य में दुर्ग, रायपुर एवं बस्तर क्षेत्र में आदिवासी ईसाई की संख्या लगभग नगण्य पायी गयी।


पनभरा और बैगा

छ.ग. राज्य एंव अविभाजित मध्यप्रदेश में आदिवासी ईसाई जनसंख्या के हिसाब से सबसे अधिक बढ़ोत्तरी का जिला सरगुजा, रायगढ़ और जशपुर है (वर्ष 1961 की जनगणना अनुसार)। वर्ष 1971 में रायगढ़ (जशपुर) जिला की आदिवासी ईसाई जनसंख्या 1,27,163 पायी गयी। वर्ष 1961 में सरगुजा जिला के उरांव जनजाति के 1498 लोगों ने ईसाई धर्म स्वीकार किया।

रायगढ़ (जशपुर) जिला वर्ष 1961 की जनगणना अनुसार उरांव 27516 लोग ईसाई धर्मावलम्बी पाये गये।

इस प्रकार उरांव जनजाति की परम्परागत धार्मिक जीवन में परिवर्तन का शिलशिला चलता रहा और वर्तमान समय में यह जनजाति दो भागों में विभक्त हो गया। धर्म में भिन्नता होने के कारण इनके सामाजिक कार्यक्रम, सांस्कृतिक समारोह, आर्थिक (कृषि) से संबंधित पूजा, पर्व–त्यौहारों में बदलाव होकर वर्तमान में इनके बीच रोटी–बेटी का संबंध भी नही स्थापित किया जाता है।

2.2 उरांव जनजाति में धार्मिक पहलु का उद्भव –

उरांव जनजाति के जीवन में धार्मिक पहलुओं का उद्भव मुख्य रूप से निम्न कारणों से हुआ है :–

1) भय।
2) प्रार्थना में विश्वास।
3) कृतज्ञता।


ग्रामवासियों को सरना पूजा करवाता बैगा

1) **भय** - इस जनजाति में ऐसा विश्वास है कि जीवन में आने वाली समस्त परेशानी किसी ऐसे सर्व शक्तिमान के अधीन है। जो इनको संचालित करता है। अतः उनके दया–दृष्ट में बने रहने के लिये उनकी आराधना करना ही होगा। सर्वशक्तिमान के साथ ही इनके कुछ ऐसे देवी–देवता है जिनका स्वभाव गर्म (तेज) होता है। जो जल्दी क्रोधित होते है। अतः इनसे यह जनजाति भयभीत रहता है, कि कहीं देवी–देवता हम से रूष्ट न हो जायें। फलस्वरूप जीवन कष्टदायी होगी। इसी डर से पजा–पाठ एवं प्रार्थना किया जाता है।

2) **प्रार्थना** - इनमें ऐसी विश्वास होती है कि पितर, देवता या धर्मेश, भगवान सुख–समृद्धि के दातक व सर्वशक्तिमान है। अतः इनसे व्यक्तिगत, पारिवारिक या समाज, पशु–पक्षी, कृषि पर आने वाली विपत्तियों एवं रोगों से बचाव या सुरक्षा के साथ ही समृद्धि हेतु प्रार्थना करना चाहिए।

3) **कृतज्ञता** - यह समुदाय उपरोक्त देवी–देवताओं के द्वारा प्रदाय सुखमय एंव खुशहाल जीवन और समृद्धि के लिये कृतज्ञता व्यक्त करता है। यह जनजाति प्रत्येक पर्व–त्यौहार में भगवान की पूजा–अर्चना कर आभार व्यक्त करता है।

2.3 उरांव जनजाति के प्रमुख देवी-देवता -

उरांव (संसारी/सवसरियास/सौंवसरिया) जनजाति में दो प्रकार के देवी–देवता पाये गये है जो निम्नानुसार है :–

क्रमांक	नर्म (सालिन) स्वाभव	गर्भ (तेज) स्वाभव
1	धर्मेश (निराकार भगवान)	पाठ–महादन
2	बीड़ी बेलस (सूर्यदेव)	दरहा–देवशाली
3	सरना आयंग (मॉ)	चण्डी–चण्डियॉ (जोंख़ (मूतरी), पेल्लों, पच्चों चण्डी,
4	मृत पूर्वज	खूँट
5	पूर्वज	दरहा चिंगरी
6	करम देव	चिंगर नाद
7	चंदों (चॅंद्रमा)	
8	ग्राम देवी	

2.4 उरांव जाति के प्रमुख आराधक -

उरांव जनजाति में पाये जाने वाले प्रमुख आराधक निम्नानुसार है:–

1. **धर्मेश** - संसारी, सवसरिया, सौंसरिया उरॉव जनजाति द्वारा निराकार भगवान में भी विश्वास किया जाता है।

2. **बीड़ी बेलस** - उरांव जनजाति द्वारा सूर्य देव को अपना आदि धर्मेश माना जाता है। इनकी पूजा–अर्चना सरहूल पर्व में किया जाता है।

3. **चन्द्रमा** - उरांव जनजाति में चन्द्रमा को उतना ही श्रद्धा व विश्वास से पूजा जाता है जितना सूर्य देव की। उरांव जनजाति की लगभग सभी पर्व या त्यौहार इनकी दुधिया रोशनी (पूर्णिमा की रात) में सम्पन्न किया जाता है। सोहराई छोड़कर।

4. **धरती (खेखेल)** - धरती माता की पूजा मुख्य रूप से सरहुल पर्व में इनकी पसंदीदा स्थल **सरना** में किया जाता है।

5. **करम देवता** - उरांव जाति में करम देवता की पूजा करमा पर्व में की जाती है। जो माघ पूर्णिमा में आयोजित की जाती है।

6. **मृत पूर्वज-पूर्वज** - उरांव जनजाति द्वारा अपने पूर्वजों की पूजा प्रत्येक पर्व/त्यौहार में किया जाता है।

7. **सरई पेड़** – उरांव जनजााति द्वारा साल वृक्ष को देव के रूप में खद्दी पर्व पर पूजा किया जाता है। जो साल का पहला पर्व होता है।



बैगा घोर्ची रस्म करवाता उरांव पुरूष

8. **कुल देव-देवता** - उरांव जनजाति के द्वारा अपने–अपने वंश के पूर्वजों और गोत्र (टोटम) को कुल देवी–देवता माना जाता है।

उरांव जाति के प्रमुख देवी–देवताओं के अलावा इनमें ग्राम स्तर के देवी देवता भी पाये गये है जो निम्न हैं –

1) **ग्राम देव-देवता** - उरांव जाति के ग्राम देवता में मुख्य है पाठराजा, दरहा–दशावली एवं महादन–महादनिया जिनका कार्य/दायित्व पूरे ग्रामवासियों की सुरक्षा या देख–भाल करना होता है। पाठ महादन के अलावा भी और देवी–देवता हैं जो इनकी अधीन ग्रामवासियों एंव जीव की रक्षा करते हैं।

ग्राम देवी–देवताओं की पूजा–अराधना निर्धारित समयानुसार दिन, माह, और वर्ष के आधार पर किया जाता है, जिसमें चढ़ावा हेतु तेल, सिन्दुर, मुर्गी, बकरा, सुअर, मुर्गा, भैसा, भेड़ आदि की बलि दिया जाता है।



शहरों में साल वृक्ष शाखाओं का पूजा करता उरांव पुरूष

2) **चण्डी-चण्डिया** - उरांव जाति के ग्राम देवता–पाठराजा, दरहा–दशावली एवं महादन–महादनिया के अधीन कार्य करने वाले को चण्डी–चण्डियां कहा जाता है। इनका मुख्य उद्देश्य ग्राम व ग्रमावासियों कि खूंट, दरहा और चिंगरी नद (भूत–प्रेत) से रक्षा करना होता है।



शुद्ध पानी

3) **खूंट, दरहा और चिंगरी नद** - खूंट, दरहा और चिकरी एक नाम है। नाद का अर्थ भूत है। इस प्रकार इसका शाब्दिक अर्थ खूंट, चिंगरी एवं दरहा नाम के भूत से है। उरांव जनजाति में जनसंख्या वृद्धि के फल स्वरुप लोग ने एक स्थान से दूसरे स्थान में ग्राम बताना शुरू किया। जिससे जगह/जमीनों में कमी होने लगी। ऐसी स्थित में यह जनजाति ऐसे जगहों को अपना निवास स्थान बनाना शुरू किया जहां पर ये भूत–प्रेत रहा करते थे। अर्थात जंगल, दलदल भूमि एवं बड़ा–बड़ा पेड, जंगल आदि। जिससे इनके जीवन–शैली में व्यवधान उत्पन्न होने लगा। व्यवधान उत्पन्न होने से यह व्यथित/परेशान हो कर अपने स्थान से लोगों को बाहर निकालने के लिए जन समुदाय को तंग करने लगा, ताकि लोग स्थान छोड़कर अन्यत्र जाकर बस जाए। इन समुदायों में ऐसा विश्वास है कि ये लोगों को तंगाने के लिये ग्राम में महामारियों को जन्म देते है। किंतु जनसंख्या वृद्धि एवं जमीनों की कमी के कारण जन समुदाय उस स्थान से पलायन ना करके इनकी पूजा–अर्चना कर चढ़ावे में जानवरों की बलि देना प्रारंभ किया। और इनको शांत करने की कोशिश करने लगा, जो सफल रहा और आदिकाल से ऐसे भूतों–प्रेतों वाली स्थानों को अपनाने की पूर्व इसके संबंध में बहुत जांच–पड़ताल उपरांत ग्राम बैगा/पहान/पुजारी या इसकी जानकारी रखने वाले के द्वारा सर्वप्रथम वास किया जाता है। धीरे–धीरे अन्य लोगों के द्वारा भी बसना शुरू किया जाता है।



तुम्बा से पानी भरता पनभरा

इनके द्वारा वासित जगहों को अपनाने वाले इंसान को भुंईहर/बैगा/पुजारी कहा जाता है। इन भूतों की पूजा–अर्चना भुंईहर/बैगा/पुजार के परिवार वालों के द्वारा किया जाता है इस जमीन को **"नाद खल्ल"** भूत खेत कहा जाता है। इस समुदाय में विश्वास है कि ग्रामवासियों पर हैजा, प्लेग या अन्य संक्रमित बीमारी/महामारी को फैलाते हैं। तब ग्रामवासियों के द्वारा भूंईहर परिवार को पूजा–पाठ करके इन्हें शांत कराने को कहा जाता है। यदि भूंईहर परिवार द्वारा इससे इनकार किया जाता है तो संबंधित खेत/जगह को ग्रामवासियों के द्वारा पहान/पुजारी या बैगा को दान कर दिया जाता है। पहान/पुजारी या बैगा द्वारा जिम्मेदारी लेने के उपरांत बिमारियों को शांत कराने हेतु पूजा–पाठ किया जाता है। इनकी अराधना परिवार विशेष द्वारा सम्पन्न किया जाता है।

इनकों चढ़ावे में चढ़ने वाली मुर्गे का रंग निर्धारित नहीं होता है। अलग–अलग जगहों पर भिन्न–भिन्न जानवरों की बलि दी जाती है। यथा–मुर्गा, बकरा, भेंड़, सुअर, भैंसा और कहीं–कहीं मानव की बलि दिया जाता है। वर्तमान में यह प्रथा लगभग शून्य है। जिस परिवार द्वारा इन्सानों का बलि दिया जाता था, उन्हें ''**ओड़का**'' कहा जाता था। यह शब्द आज भी प्रचलन में है। ओड़का शब्द का अर्थ इंसानों का बलि चढ़ाने वाला होता है।



पानी और मटका का पूजा करते बैगा

इन भूतों का उद्देश्य लोगों को केवल हानि पहुंचाना होता है। इसी लिये उरांव समुदाय द्वारा नवीन ग्राम स्थापना पश्चात ग्राम सुरक्षा हेतु गांव के चारों दिशाओं में चण्डियों को तैनात किया जाता है। ताकि ग्राम व ग्रामवासी सकुशल जीवन–निर्वाह कर सकें।

उपरोक्त देवी–देवताओं की पूजा–अर्चना केवल संसारी उरांव जनजाति द्वारा किया जाता है। ईसाई उरांव जनजाति द्वारा केवल माता मरियम और ईसा–मसीह का अराधना किया जाता है।

वर्तमान परिवेश के फलस्वरूप संसारी उरांव जनजाति की जनसूमह द्वारा हिन्दु धर्म की कुछ धार्मिक प्रवृत्तियों एवं पर्वों को भी अपनाते हुए देखा गया है।

2.5 उरांव जनजाति में पाये जाने वाली प्रर्थानाएं-

उरांव (संसारी/सवसरियास/सौंवसरिया) जनजाति द्वारा परंपरागत प्रार्थनाएं निम्न देवी–देवताओं के पास किया जाता है।

1) **निराकार (अर्मूत) भगवान** - उरांव जनजाति निराकार भगवान में भी विश्वास रखता है। इनके समक्ष समुदाय द्वारा निम्नानुसार प्रार्थना की जाती है :–

निन धर्मे बाबा हिक दै,
अख़दम-बलद आदिन, हुरमिन समढ़के।
एम्हैं ख़न मल ईरी, निग्हैं ख़न ईरी,
निनिम बाबा हिकदै समढ़ाके।।

अर्थ - आप ही भगवान सर्वशक्तिमान हो, हमसे जाने अनजाने में हुए सारी गलती को क्षमा करके हमें संभालना, क्योंकि हमारी आंखें सही गलत को देखकर भी परख नहीं पाती किंतु आपकी आंखें तो सब कुछ देख (परख) सकती है। आप ही हमें संभालना, आप ही तारणहारा है।



शहरों में उरांव समाज द्वारा सरई शाखाओं के समक्ष प्रार्थना

इस प्रार्थना को सुबह, शाम, दोपहर किसी भी समय किया जा सकता है। यह प्रार्थना अपने आप को मन खुश व निष्कलंक रखने के लिए किया जाता है। यह प्रार्थना प्रत्येक व्यक्ति (स्त्री–पुरुष, छोटे–बड़े,)के द्वारा किया जा सकता है।

1) **बीड़ी बेलस** - उरांव समुदाय द्वारा सूर्य देव को बीड़ी बेलस कह कर पुकारा जाता है। कुडुख़ बोली में बीड़ी का अर्थ सूर्य व बलेस का अर्थ राजा अर्थात सूर्य राजा होता है। यह समुदाय सूर्य को सृष्टि का प्रमुख राजा मानता है। इसी लिए इन्हें राजा कह कर पुकारा जाता है। इनमें ऐसा विश्वास है कि यह समस्त प्राकृतिक जल–थल–नभ को जीवन प्रदान करते हैं। इस जनजाति द्वारा बीड़ी बलेस की पूजा मुख्य रूप से ग्राम स्थापना व ग्राम शुद्धिकरण के समय किया जाता है यह पूजा अर्चना समस्त अनुभवी व बुजुर्ग पुरुष सदस्यों के द्वारा किया जाता है। जिसमें निम्नानुसार प्रार्थना किया जाता है :–

हे बीड़ी बेलायों एएम अक्कू पद्दा कमाल उधरअःलगदम।

अक्कू एम्हैं काम-काजन बेस-बेसिम मना नेकआ।

बिल्ल एदके। दवले डहरे तेंगके।।

अर्थ :- हे सूर्य देव, अब हम सब नया ग्राम बना रहे है। अब हमारा काम काज अच्छे से होना चाहिए और आप हमें रोशनी देकर हमें सही रास्ता दिखाएं। हुदि निंग्हैं नामे नू आबदा तिख़िल टिक्क़ा लगदप।

इन्नातिम एम्हैं एप्पानू नाद-भूत,डाईन-बिषहा ति बछरदम नेकआफ।।

अराहूदि ख़ेर बी गहि बेलन चिआ लगदन।

एड़प्पानता आलारिन अरा ख़द्द-ख़ररारिन,अडों-मनख़ान दवले उईके।।

2) **पलकांसना / डंडा काटना पूजा** - उरांव जनजाति के द्वारा प्रत्येक शुभ कार्य के पूर्व या बाद में यह पूजा संपन्न कराई जाती है। पलकासना के समय निम्न अनुसार प्रार्थना की जाती है :–


सरई शाखाओं का पूजा करता उरांव पुरूष

हुदि निंग्हैं नामे नू आबदा तिख़िल टिक्का लगदप।

इन्नातिम एम्हैं एप्पानू नाद-भूत,डाईन-बिषहा ति बछरदम नेकआफ।।

अराहूदि ख़ेर बी गहि बेलन चिआ लगदन।

एड़प्पानता आलारिन अरा ख़द्द-ख़ररारिन,अडों-मनख़ान दवले उईके।।

अर्थ - हे भगवान मैं आपके नाम में अक्षत चावल गिरा रहा हूं, आज से ही मेरे घर परिवार के लोगों को भूत–प्रेत, टोना–टोटका एवं नापाक इरादों से बचाए रखना। हे भगवान आपके नाम में अंडे का पीला भाग चढ़ावे में दे रहा हूं, आज से ही मेरे घर के बाल–बच्चों तथा पशुधन (गाय–भैस) की रक्षा करना।

यह प्रार्थना समाज या घर के पुरुष मुखिया द्वारा किया जाता है। यह प्रार्थना निराकार भगवान, सूर्य भगवान एवं सृष्टिकर्ता धरती माता के पास किया जाता है। इस प्रार्थना से भगवान का आशीर्वाद प्राप्त होता है जिससे नापाक चीजों व विचारों का प्रभाव परिवार पर नहीं पड़ता है। यह एक पवित्र और लाभदायक प्रार्थना माना जाता है।

3) **अन्य देवी-देवता** - उरांव जनजाति के द्वारा ख़द्दी त्यौहार के दिन ही सरना पूजा में हितकारी देवी–देवताओं के साथ ही साथ अहंकारी, विनाशकारी एवं हानिकारक भूत–प्रेतों की भी पूजा–अर्चना की जाती है। इनके लिये की जाने वाली प्रार्थना निम्नानुसार है :–

दरहा-देवसाली देवता अरा हुरमी नाद-पाईत एकसानूम रओर,

पूरब-पछिम, उत्तर-दख़िन हुरमी मडहानू निम खटके मोख़के।

एम्हैं होरमा आलर मुक्कर-मेतर, जोंख़र-पेलर अरा ख़द्दर,

अकै दवले ख़द्दी बेचनर-नलनर अरा खुशमार नेकआ।।

अर्थ :- हे दरहा–देशवाली देव, सभी देव भूत–प्रेत, चुड़ैल, भूला भटका आप सब जहां कहीं भी हो पूर्व–पश्चिम, उत्तर–दक्षिण सभी


पलकांसना पूजा करता उरांव पुरूष

समूहों के बीच इसें आपस में मिल बांट कर खा लेना और हम सभी स्त्री–पुरुष, युवक–युवतियां और बाल–बच्चों को आनंदित रखना।

इस समुदाय द्वारा दरहा, देशवाली एवं अन्य अधिकारी एवं विनाशकारी भूत–प्रेतों को लाल व काला रंग का मुर्गा चढ़ावें या बलि दिया जाता है। चढ़ावें में चढ़े मुर्गा और रोटी की कुछ टुकडों को देकर इन्हें शांत, मौन, एवं अपने प्रति कृपा बनाये रख़ने हेतु निवेदन किया जाता है। जिससे उनकी प्रकोपों से बचा जा सके।

4) **ख़द्दी त्यौहार में पूर्वजों की पूजा** - सरहुल/ख़द्दी पर्व में ग्राम बैगा/मुखिया, पुजारी द्वारा समस्त ग्राम वासियों के लिए ग्राम के समस्त पूर्वजों–पितरों का पूजा व प्रार्थना किया जाता है, जो निम्नानुसार हैः–


मटका में सिंदूर टिका करता बैगा

पचबल आलारों इन्ना एएम पूना ख़द्दी मनआ लगदम।
नीम मसड़ा-मुड़ी, पूखली, टोंका-टिकूरएकसानूम रअदर,
ख़द्दों-पच्चोंर, पच्चोंर-पचगिर खटरके दरा ओनके-मोखके।।
पचबल आलारों ताचीनू-मामनू, रुसी-रागे अम्बके मना।
लड़नू-दोस्तीनू अरा कोईल पार, कोईल रुसी-रागे अम्बके मना,
एमन दव ले उइके, जोख़र-पेल्लर दवले बेचनर-नलनर नेकआ,
नेकअन हूँ किईरो अच अम्बन चख़ा नेकअ।।

अर्थ :- हे हमारे पूर्वजों आज हम सब नया खद्दी/सरहुल मना रहे हैं। आप सब जहां कहीं–शमशान, पोखर, मैदानी भूभाग में हो वहीं पर बाल–बच्चे, बूढ़ा–बुढ़िया सभी आपस में बटवारा करके खा–पी लेना। आप सब मामा–फूफी का संबंध की तरह रूठना कर आपस में झगड़ा ना करना और हमारी रक्षा करना अर्थात आप सब हम लोगों की अमन–चौन रखना । युवक–युक्तियां आनंद पूर्वक नाचते–गाते, खुश रहे। हम में से किसी को किईरों (कांशी) का कांटा न चुभने देना अर्थात हमारें जीवन में कोई दुख–तकलीप आने न देना।

पूवजों को चढ़ाई जाने वाली भोग को सित्ती किचना कहा जाता है। चढ़ावे में चावल आटे से बनी रोटी, मूर्गा, हड़िया पानी (तपवन) दिया जाता है।

5) **पूवजों की पूजा** - उरांव जनजाति समुदाय के प्रत्येक परिवार पुरूष मुख्या द्वारा अपने पूवजों का पूजा किया जाता है। जिसमें मुखिया द्वारा अपने पूवजों को नाम, गोत्र से पुकारते हुए, उनसे निम्नानुसार प्रार्थना किया जाता है :–

खेख़ल किईया पचबालार रअदर।

कुक मईया धर्मे बाबस रअदस।।

एम मझही नू रअःदम, एमन एरदर का मला।

एम्हैं नाड़ी-चेपन होअर की कालके,

मलबुझूदर एमन एवं उल्लासाधओर।।

अर्थ :- हे पूवजों आप सब धरती के नीचे और हमारे सिर के ऊपर भगवान विराजमान है और हम सब आप दोनों रक्षक के मध्य वासित है, फिर आप सब हमे देखते (ध्यान/ख्याल) क्यों नहीं हो? आप हमारी सारी दु:ख–तकलीफों (शारीरिक परेशानी) का हरण करों। क्या आप को हमारी गुहार/विनती समझ नहीं आ रहीं है? हमें और कितने दिनों तक परेशान होना होंगा?


पानी से भरा मटका में साल फूल डालते हुए ग्रामवासी

इस जनजाति द्वारा अपने पितर/पूवजों का अपना कुल देवता मान जाता है। परिवार में होने वाली प्रत्येक समस्याओं के लिये ये अपने पूवजों को ही दोषी मानता है। इस समुदाय में विश्वास है कि हमारी समस्त समस्याओं को सुलझाना पूवजों का दायित्व है। इसी कारण पूवजों के प्रथानाओं में प्रश्न/सवाल के साथ ही क्रोध भी जाहिर किया जाता है।

6) **पीतर मीलान** - उरांव जनजाति में शिशु जन्म उपरांत शिशु के नाल झड़ने के बाद ही छट्ठी/नामकरण/पीतर मिलान संस्कार किया जाता है। पीतर मिलान के माध्यम से यह ज्ञात किया जाता है कि नवजात शिशु के रूप में किस पूर्वज ने जन्म लिया है। पूवज के पुनर्जन्म की खुशी में नवजात शिशु की स्वागत् किया जाता है।

पीतर मीलन हो जाने के उपरांत नवजात शिशु के लिए स्वागत एवं पूवजों/भगवान से निम्नानुसार प्रार्थना किया जाता है :–

निन निंग अज्जोंस (नाना) गहि नामें होचकय।

आस लेखम एजके-बिजके दरा दवले ननके ओनके।।

धर्मे बाबा निन ईसीन दवले ख़ापके पोसके अरा उईके।।।

अर्थ :- तुम (नवजात शिशु) अपने नाना का पीतर लिये हों। उन्ही की तरह खुशहाल जीवन यापन करना। भगवान आप इसकी भरण–पोषण व रखवाली अच्छे से करना।

8) **जोंख़ चंडी** - जोंख़ चंडी की पूजा–अर्चना उरांव जनजाति के नवयुवकों के द्वारा फागुन मास में किया जाता है। यह पूजा अच्छे शिकार हेतु शिकार में जाने के पूर्व जोंख चंडी से प्रार्थना किया जाता है, जो निम्नानुसार है :–

हुदि मूतरी चंडी एएम निग्गा गे साल-भईरगे ख़ेर चिआ लगदम।

एम्हैं कुम्को-कुकेरिन सालों भर दवले नलनर-बेचनर नेका।।

अर्थ :- हे चण्डी आप को पूरे एक वर्ष के लिये मुर्गे का बलि (चढ़ावा) दिया जा रहा है। आप से निवेदन है हमारे लड़के–लड़कियों को वर्ष भर आनंद पूर्वक (शिकार अच्छा मिलने पर नाचते–गाते घर वापसी करेगें) जीवन प्रदान करना।


सरई फूल तोड़ते हुए उरांव पुरूष

7) **गांव देवती/ग्रामदेवी** - उरांव समुदाय द्वारा करमा मां के निर्देशानुसार ग्राम में गांव की देवी की स्थापना ग्राम के मुख्य द्वार पर किया जाता है। उसे ग्राम देवी कहा जाता है। ग्राम देवी ग्राम के सुरक्षाकर्मियों/पहरेदारों की मुखिया होती है। इनका कार्य ग्राम में बाहर से आने वाली विपत्ति (मानव या जानवरों पर होने वाले महामारियों) को रोकना होता है। ग्राम वासियों के द्वारा प्रत्येक वर्ष सावन के शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि को पहान/बैगा की अगुवाई में ग्राम देवी के लिए बकरा की बलि दिया जाता है और ग्राम देवी से प्रार्थना किया जाता है कि हमारी महामारी से सुरक्षा करना।

2.6 उरांव जनजाति के प्रमुख पर्व या त्यौहार -

उरांव जनजाति के प्रमुख तीज त्यौहार निम्न हैं –

क्र.	पर्व/त्यौहार	आराधक	माह
1.	फग्गु (फाग, होली)	रेंड, सेमर वृक्ष	फरवरी–मार्च
2.	सरहुल/खद्दी	साल वृक्ष, सूर्य–धरती	मार्च–अप्रैल
3.	टुण्टा	खुशियाँ	जून
4.	तुसगों	फसल, पूर्वज	अगस्त–सितम्बर
5.	कदलेटा	फसल, पूर्वज	अगस्त
6.	करमा	करम वृक्ष, पूर्वज	सितम्बर–अक्टूबर
7.	सोहराई (दीपावली)	मेदा वृक्ष, पूर्वज	नवंबर
8.	माघ	फसल, पूर्वज	दिसम्बर–जनवरी

यह वनवासी तथा कृषि प्रधान जनजाति है जिसके कारण इनके तीज–त्यौहार भी इन्हीं से संबंधित होती है।



सरना स्थल में पूजा करता बैगा

1) **फग्गु** - विगत वर्ष की विदाई एवं नव वर्ष की स्वागत के रूप में यह पर्व चैत्र माह में मनायी जाती है। फाग पर्व में रेंड और सेमर पेड़ का दहन किया जाता है। दहन के पूर्व ग्राम के बैगा द्वारा शिकार की देवी–चण्डी माता की पूजा की जाती है। जिसमें बैगा द्वारा नव वर्ष में अच्छी शिकार, बिमारियों की रोक हेतु कामना की जाती है। पूजा के पश्चात लकड़ी से बनायी गयी ठेर में जीवित चूजा को छोड़कर दहन किया जाता है। दहन के बाद धधकती आग में समस्त ग्रामवासी पत्थर फेंकते हुए हमारी समस्त बिमारियों (खाज, खुजली, बुखार) को लेते जा की पुकार लगाते हैं। दूसरे दिन उरांव युवक शिकार हेतु जंगल प्रस्थान करते हैं।

2) **सरहुल** - खद्दी पर्व उरांवों का मुख्य पर्व है। इसमें यह जनजाति सूर्य देवता और धरती माता का विवाह ''**सरना**'' में कराती है, इनकी भूमिका ग्राम के बैगा–बैगानी निभाते हैं। विवाह का मुख्य उद्देश्य उन्नत कृषि ऊपज की कामना। इनमें विश्वास है कि सूर्य और धरती के मधुर प्यार से या सामंजस्य से उन्नत कृषि उपज प्राप्त की जा सकती है।

सरहुल पूजा के साथ यह जनजाति आने वाले नव वर्ष में किस दिशा में कितनी मात्रा में व दिन या रात में वर्षा होने वाली है इसकी पूर्वानुमान मानसून गतिविधि की जानकारी निकालता है, और उसी के आधार पर कृषि कार्य सम्पन्न किया जाता है। इनमें विश्वास होता है कि रात की वर्षा से धान की उपज और दिन की वर्षा से दलहन की उपज अधिक होती है। पूजा के साथ ही नव वर्ष में बोई जाने वाले धान की बीजा का भी पूजा किया जाता है। सरहुल पर्व में उरांव युवक–युवतियां सरई फूल से श्रृंगार करके नाच–गान करते हैं।

3) **टुण्टा** - यह पर्व समस्त कार्यों से मुक्त दिनों को खुशमय बनाने के लिए आयोजित की जाती है। जिसमें मांस, मदिरा, पकवान का सेवन कर नाचगान किया जाता है।

4) **तुसगों** - उरांव जनजाति द्वारा तुसगों पर्व नये फसल को एक साथ सपरिवार भोजन करने हेतु मानते हैं। जिसमें सर्वप्रथम घर का मुखिया नये अन्न से बने पकवान, पूजा–पाठ कर अपने पूर्वजों, पितरों के नाम पर चढाता हैं और आभार व्यक्त करता है कि आपकी कृपा से अनाज फसलों की उपज अच्छी रही अतः इसे आप पहले ग्रहण कीजिये। इसके साथ ही आगे भी कृपा दृष्टि बनाये रखने के लिए निवेदन, प्रार्थना किया जाता है।



करम वृक्ष का पूजा करते हुए उरांव समाज

5) **करमा** - इस पर्व में उरांव जाति की कर्म के प्रति धर्म का उल्लेख मिलता है। यह पर्व उरांव कन्याओं द्वारा अपने भाई की उज्जवल व सुखमय जीवन की कामना के लिये किया जाता है। करमा त्यौहार मे सुनायी जाने वाली कहानी/कथा से यह सीख या ज्ञान दिया जाता है कि कर्म ही धर्म है। तुम अपना कर्म करते रहो वही तुम्हारा धर्म है। करम देवता का वास या प्रतीक करम पेड़ को मान कर उनकी पूजा आदिकाल से किया जा रहा है।

6) **सोहरई** - यह पर्व पशु धन की सुरक्षा एवं उसकी वृद्धि की कामना के लिए मनायी जाती है। परिवार का मुखिया गोशाला के अन्दर पूजा–अर्चना करता है और अपने पूर्वजों से पशु धन की सुरक्षा हेतु निवेदन करता है।

यह पर्व हिन्दु धर्म की दीपावली की तरह है। जिसमें पशुओं की पूजा, साफ–सफाई, भोग के रूप में ''कुहड़ी'' आदि दिया जाता है।

7) **माघ** - यह पर्व कृषि कार्य सम्पन्न करने की खुशी में आयोजित किया जाता है जिसमें मास–मदिरा एवं हड़िया का सेवन करके अमोद–प्रमोद से नाच गान किया जाता है।

उपरोक्त समस्त पर्व पूजा पाठ संसारी उरांव के द्वारा किया जाता है। ईसाई उरांव समुदाय द्वारा पूर्व मे उल्लेख पर्व के साथ ही ''**जलसा**'' (25 दिसम्बर) एवं कबूर परब (कब्र की पूजा) सभी में माता मरियम एंव प्रभु ईसा की पूजा किया जाता है।

2.7 आत्मा और भूत-प्रेत -

उरांव जनजाति आत्मावादी है यह जनजाति यह मानती है, कि व्यक्ति की मृत्यु पश्चात भी आत्मा जीवित या क्रियाशील होती है। इसी कारण इनमें इनसे संबंधित दो पूजा–पाठ आयोजित की जाती है। पहला ''**पीतर मिलान**'' दूसरा ''**एखह मंख्ना**'' या ''**छई भितर**''। इनमें ऐसा विश्वास भी कभी–कभी देखने, सुनने को मिलता है कि नवजात या दुधमुहा बच्चा यदि लगातार रोता है, कहीं यह अपने पीतर/पूर्वज की खोज तो नहीं कर रहा है? समस्यानुसार बच्चे का पीतर मिलान किया जाता है। समस्या का पूर्वानुमान सही होने पर बच्चा रोना बंद करके दुग्धपान करने लगता है। पीतर मिलने पर इससे संबंधित पूजा–अर्चना किया जाता है।

संसारी उरांव समुदाय पूर्णतः आत्मावादी है क्योंकि इनके समस्त पर्व/त्यौहार एवं पूजा–पाठ मे पूर्वजों/पीतरों का पूजा अनिवार्य रूप से किया जाता है।

1) **भूत-प्रेत** - संसारी उरांव जनजाति द्वारा आत्मा के साथ ही साथ प्रेत आत्मा पर भी विश्वास किया जाता है। प्रेत आत्मा का सृजन मुख्य रूप से समय पूर्व मृत्यु लोक में पहुंचना माना जाता है। जिसके लिए जिम्मेदार कारणों में जलने से मृत्यु (पाडेल मुआ) डुबने से मृत्यु (डुबल मुआ), फांसी से मृत्यु (टंगल मुआ) तथा गर्भावस्था में मृत्यु होने पर (चुड़ैल) हो सकता है। समय पूर्व धरती लोक से मृत्यु लोक में जाने के कारण उन्हें स्वर्गलोक में जगह नहीं मिलती तथा शरीर के आभाव में वे धरती लोक के सदस्य भी नहीं रह जाते फलस्वरूप इनकी आत्मा भटकती रहती है। जिसे प्रेत आत्मा, मसान, भूत आदि के नाम से पुकारा जाता है।


पूजा सामग्री

उपरोक्त आत्माओं का वासस्थल मुख्यतः वहीं माना जाता है जहां उनकी मृत्यु हुई होती है या शमशान घाट में होती है।

2) **जादू-टोना** - उरांव जनजाति में जादू टोना के प्रति भी विश्वास अत्याधिक पाया गया। इनके अनुसार जादू दो प्रकार के होते हैं पहला सफेद (अच्छा) जादू दूसरा काला (बुरा) जादू होता है।

जादू–टोना की पहचान प्रभावित व्यक्ति के व्यवहारों से किया जा सकता है। वह शारीरिक पीड़ा का अनुभव करेगा, धीर–धीरे कमजोर दिखने लगेगा तथा मानसिक संतुलन बिगड़ने लगेगा। जिससे वह व्यक्ति असमान्य व्यवहार करने लगता है। इसके अलावा स्त्री का बांझपन, बार–बार मृत शिशु को जन्म देना आदि भी अदृश्य काला जादू का प्रतीक माना जाता है।



सरना माता को जोहार करता बैगा

जादू–टोना संबंधी ज्ञान या जानकारी दो प्रकार से प्राप्त किया जाता है। पहला वंशानुगत (माई–गोहनोरी) दूसरा अर्जित (सिखल मयारी)

काला जादू करने वाला जिस व्यक्ति से ईर्ष्या, जलन, या क्रोध करता है उसके बाल, कपड़े, पैर की धुल आदि के माध्यम से जादू करके अपने वश में रखकर इच्छानुसार परेशान करता है।

परिवार का कोई सदस्य जब असामान्य व्यवहार करने लगता है या शारीरिक कष्ट होने पर मुखिया द्वारा ''**देवास**'' का सहारा लिया जा कर समस्याओं की पुष्टि कराया जाता है। पुष्टि उपरांत दुष्ट आत्मा को दूर करने के लिए ओझा का सहयोग लिया जाता है। ओझा समस्यानुसार अनेक सामग्री (मुर्गी, अक्षत, धुप, सिन्दुर, चुड़ी, सुवर, आदि) की बलि देकर मंत्रोच्चारण से दुष्ट आत्मों को पीड़त व्यक्ति के शरीर से दूर किया जाता है तथा उसके प्रभाव से बचाव हेतु दवाई, जड़ी–बूटी, खाने–पीने, लगाने एवं पहनने को मंत्रोच्चरित सुरक्षा कवच देकर शारीरिक एवं मानसिक कष्ट से मुक्त कराया जाता है।

2.7 पारंपरिक चिकित्सा उपचार -

उरांव जनजाति द्वारा दुष्ट आत्मा के प्रकोप से बचने के लिए बैगा, ओझा, देवास आदि का सहयोग, लिया जाता है। इसके साथ ही वनौषाधि का उपयोग भी किया जाता है।

क) **बैगा** - ग्राम स्तर के समस्त देवी–देवता ग्राम बैगा के अधीन होता है। अतः दुष्ट आत्मा के प्रकोप से बचाव हेतु ग्राम देवी–देवता का आहवान बैगा द्वारा किया जाता है।

इसी कारण समस्त ग्रामवासियों के द्वारा शारीरिक, मानसिक कष्ट होने पर सर्वप्रथम बैगा के शरण में लिया जाता है। बैगा द्वारा नाड़ी पकड़कर लक्षणों की जाँच/पहचान कर झाड़/फूंक किया जाता है।

ख) **ओझा** - इनके द्वारा सफेद जादू के माध्यम से काला जादू के प्रभाव को दूर किया जाता है इसी कारण इन्हें देव दूत भी कहा जाता है। ओझा मंत्रोच्चारण के साथ–साथ जड़ी–बूटी का उपयोग भी किया जाता है।

ग) **देवास** - देवास का कार्य परेशान करने वाले प्रेतात्मा की पहचान करके उसका उपाय (निवारण) का रास्ता/उपाय बताना होता है।

पारम्परिक उपचारों से परेशानी कम या ठीक नहीं होने की दशा में आधुनिक चिकित्सा पद्धति द्वारा भी उपचार कराया जाता है।



पारंपरिक चिकित्सक

अध्याय - 3

3.1 पारंपरिक सरना उत्सव -

उरांव जनजाति में प्रचलित सरना उत्सव ''सरना माता या चाला पच्चो'' की आराधना के लिए आहुत की जाती है। सरना माता को धरती माता, वन देवी एवं पाला अयंग के नाम से भी प्रसिद्धि प्राप्त है।

सरना माता साल के वृक्ष में ही दर्शन देती है और उसी में अन्तर्ध्यान हो जाती है। जिसके कारण इनका वास स्थान साल वृक्ष में माना जाता है। चाला पच्चो उरांव जनसमुदाय को दर्शन देकर उन्होंने कहा कि ग्राम के जनधन एवं ग्राम के सीमाओं को सुरक्षित रखने के लिए चण्डी देवी, ग्राम देवी, दरहा स्थल की स्थापना किया जाए।

सरना साल वृक्षों के समूह को माना जाता है जिसे मानववैज्ञानिकों ने ''**पवित्र संकुल**'' नाम दिया है। जहां चाला पच्चो का वास होता है। चाला पच्चो की अराधना उरांव समुदाय द्वारा खद्दी/सरहुल पर्व में सरना स्थल के साल वृक्ष के नीचे आहुत की जाती है।

सरना की आराधना उरांव समुदाय के साथ–साथ स्थानीय जनसमुदाय द्वारा भी आहुत की जाती है। वहीं उरांव बहुल ग्राम में सरना उत्सव के **दिवस ही खद्दी/सरहुल उत्सव** बड़े ही हर्षो उल्लास से मनाया जाता है।

3.2 खद्दी/सरहुल -

उरांव जनजाति में पारंपरिक रूप से मनाये जाने वाले पर्वों में खद्दी/सरहुल प्रमुख पर्व है। हिन्दी वार्षिक कलेण्डर अनुसार इसे वर्ष के प्रारंभ में मनाया जाता है। समुदाय द्वारा कृषि कार्य का शुभारंभ करने से पूर्व वर्षा का अनुमान लगाता है। नये वानस्पतिक चीजों के आगमन पर यह पर्व सम्पादित किया जाता है साथ



साल वृक्षों का समूह

ही कृषि कार्य योजना तैयार की जाती है। पूर्वानुमान अनुसार वर्षा रात्रिकालिन होने पर धान की उपज अच्छा होना एवं दिन में वर्षा होने पर दलहन की उपज अच्छा होगा माना जाता है। वर्षा के अनुसार ही खेतों व अन्य कृषि योग्य जमीन की तैयारी की जाती है। अध्ययित जनजाति का स्वभाव प्रकृति प्रेमी होने के कारण प्राकृतिक खाद्य पदार्थों का उपभोग पूजा उपरांत किया जाता है।

खद्दी पूजा ग्राम के सरना में ग्राम बैगा द्वारा सम्पादित किया जाता है। सरना में मुख्यतः साल वृक्ष की अधिकता पाई जाती है। मान्यतानुसार चाला पच्चो का वास स्थान साल पेड़ को माना गया है। साल वृक्ष को जीवित वृक्ष माना जाता है। समुदाय द्वारा जीवित का अर्थ ऐसे वृक्षों से है जो अपने आप को जीव में परिवर्तित कर सके। उदाहरण :– साल के पत्तों के सिरा को पत्ते से अलग कर रात भर नमी वाला स्थान में रखे जाने से उसमें एक नया जीव का प्रादूर्भाव होता है। अर्थात साल वृक्ष को जीवित पेड़ माना जाता है।


मक्का/साल/सरई फूल

इस जनजाति द्वारा बेवर खेती के पश्चात कालांतर में स्थायी कृषि को अपनाया गया। खद्दी पर्व के दिन बेवर खेती का एक नमुना बैगा द्वारा जनसमुदाय के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। स्थायी कृषि के कारण जमीन की उर्वरता एवं फसल की पैदावार में कमी आने लगी। जिसके सामाधान हेतु समुदाय द्वारा विभिन्न उपाय किये गये परन्तु सफलता प्राप्त नहीं हो सकी। तत्पश्चात् धार्मिक विचारों का प्रादुर्भाव हुआ। समुदाय द्वारा माना जाता है कि प्रकृति समस्त जीव–जंतुओं की पोशक है। इस तर्क के आधार पर धरती माता को समस्त प्राकृतिक सम्पदाओं की पोशक माना जाने लगा और प्रकृति के अनुसार जीवन निर्वाह किया जाने लगा जिससे प्रकृति की गतिशीलता एवं संतुलन बनाये रखने से समस्त प्राकृति आपदाओं से निपटा जा सकता है। ऐसी आस्था और विश्वास के साथ समुदाय द्वारा धरती माता का विवाह बीड़ी बेलस (सूर्यदेव) से प्रतिवर्श संपन्न कराने लगे, जो आज पर्यन्त पारंपरिक रूप से प्रचलित है। विवाह उपरांत जिस प्रकार नव विवाहित जोड़ा एक नये जीवन का आनंद लेते हुए नये जीव को जन्म देते हैं। इसी प्रकार धरती माता विवाह उपरांत दोगुनी उमंग के साथ अच्छा फसल की पैदावार और प्राकृतिक वस्तुओं को उपलब्ध कराती रहेगी।

ग्राम के बैगा–बैगीन, अनुभवी बुजूर्ग एवं सीखने वाले युवाओं द्वारा चैत पूर्णिमा की रात को सरहुल की पूजा सम्पन्न करायी जाती है। सरना स्थान जाने हेतु समस्त पदाधिकारी अथवा जिम्मेदार व्यक्ति एवं ग्रामवासी सुबह अपने पितर पूर्वज का आराधना करने के बाद बैगा के घर एकत्रित होकर बैगा के अगुवाई में सरना सुप एवं आवश्यक सामग्री यथाः– धान, चावल, दाल, थाल, लोटा, चाकू, धूप, धुवन, सूत, तेल, सिन्दुर, साल फुल एवं मुर्गा–मुर्गी के साथ चलते हैं।



परंपरागत परिधान में नृत्य करता हुआ उरांव समाज

सरना पूजा में बैगा–बैगीन द्वारा पानी मंगाकर हाथ–मुंह धोकर पूजास्थल की साफ–सफाई करते है। इसके पश्चात् निर्धारित मक्का मन्नो (साल वृक्ष) में तीन से पांच बार सूत लपेटकर बैगा–बैगीन वैवाहिक मुद्रा में पूजा स्थल पर बैठ जाते हैं। बैगा पूजा स्थान पर तेल व सिन्दूर से तीन रेखा खिंचता है। जिसमें पहली रेखा बीड़ी बेला दूसरी रेखा धरती माता और तीसरी रेखा इन्द्रादेव के नाम पर पूर्वजों को पंच मानते हुए पुनः पांच खड़ी रेखा खिंचता है, जिसके पीछे मान्यता है कि विवाह पितरों (पंचों) के समक्ष सम्पन हुआ है। अर्थात इस विवाह में पितरों को प्रत्यक्षदर्शी माना जाता है। इस तरह धरती माता एवं सूर्यदेव का विवाह विधिवत पूर्ण किया जाता है। पूजा सम्पन्न होने के पश्चात् बैगा द्वारा ग्रामवासियों को प्रसाद के रूप में धान, चावल, दाल, फूल आदि बांटा जाता है। जिसे लेकर ग्रामवासी अपने धान की कोठी में रखते हुए कृषि कार्य प्रारम्भ करते हैं।

3.3 खद्दी/सरहुल का शाब्दिक अर्थ -

उरांव समुदाय द्वारा खद्दी/सरहुल पर्व का अर्थ विभिन्न तरह से परिभाषित किया जाता है। जिसे कुँडुख/उरांव व सादरी भाषा में उल्लेख करते हुए हिन्दी में शाब्दिक अर्थ का निम्नानुसार विवरण दिया जा सकता है –



परंपरागत महिला परिधान/श्रृंगार

क्र.	उरांव	अर्थ	हिन्दी
1	खद्दी	खद्दो	नवीन पीढ़ी
2	खद्दी	खज्जो	जमीन की उर्वरता के लिए धरती माता की आराधना करना
3	खद्दी	शादी	प्राकृतिक सम्पदाओं को नियंत्रित करने वाली धरती माता की सूर्यदेव से विवाह
4	खद्दी	खाद	कृषि योग्य जमीन पर खाद–बीज डालने की अनुमति
5	सरहुल	सरईफूल	साल वृक्ष में फूल आने पर मनाई जाने वाली पर्व

3.4 खद्दी/सरहुल के प्रकार -

उरांव समुदाय द्वारा मनाये जाने वाले खद्दी पर्व मुख्यतः निम्नानुसार है–

1. खद्दी
2. फग्गू खद्दी
3. बेंजड़ा खद्दी

खद्दी पर्व का मूल रूप है, फग्गू खद्दी फागुन पूर्णिमा में मनाई जाने वाली पर्व है। बेंजड़ा खद्दी शादी को कहा जाता है।

3.5 खद्दी/सरहुल पर्व दिवस का निर्धारण -

किवदंति अनुसार ग्राम स्थापना पश्चात् ग्राम की दिशा व जीवन में घटित घटना के आधार पर पर्व दिवस का निर्धारण किया जाता है, जो निम्नांकित है –

क्र.	ग्राम	दिन
1	बुमतेल	रविवार, गुरूवार
2	खरसोता	शुक्रवार, सोमवार
3	कनमोड़ा	बुधवार, शुक्रवार
4	मनोरा	सोमवार, बुधवार
5	दुलदुला	रविवार, बुधवार

3.6 खद्दी/सरहुल पर्व की तैयारी -

उरांव जनजाति का जीवन वनीय खाद्य पदार्थों से चलकर वर्तमान में कृषि प्रधान रह गया है। कृषि से संबंधित मुख्य पर्व खद्दी है जिसमें कृषि से संबंधित समस्त कृषि कार्य की तैयारी एवं संभावना आधारित कृषि कार्य योजनओं का निर्माण किया जाता है। वर्षा जल की पूर्वानुमान अनुसार खरीफ फसल की तैयारी किया जाता है। कई ग्रामों में आज भी सरना स्थल पर बेवरा कृषि पद्धति को ग्राम वासियों के समक्ष करके दिखाया जाता है।

सरना पूजा की तैयारी हेतु ग्राम के नव युवक धांगरों द्वारा ग्राम में घुमघुमकर कार्यकारणी सदस्यों के चुनाव के लिए निर्धारित दिन व समय पर **अखड़े** (करम साखों को विस्थापित करने वाला पुनीत स्थल) में एकत्रित होने का आह्वान किया जाता है। कार्यकारणी के चुनाव हेतु ग्राम के समस्त पुरूष वर्ग एकत्रित होकर गोलाकार बैठकर समक्ष में सरना सुप के साथ एक नया सुप और एक लोढ़ा भी रखा जाता है। सुप रखने के स्थान को बछिया की गोबर से लिपाई की जाती है। नये सरना सुप में अक्षत, सूत, तांबा पैसा, तेल–सिन्दूर आदि रखे जाते हैं। पुराने सरना सुप को फाड़े हुए सखुआ के लंबी डंडी से बांध कर बैगा एक ऐसे युवक का चयन करता है जिसकी छायां पतली हो उसके बायें हाथ के अनामिका उंगली में बांध कर दोनों आंखों में कपड़े की पट्टी लगाकर लोढ़ा पाय चलाने वाले धांगर का चुनाव किया जाता है। चुने गये पाय चलाने वाले धांगर के हाथों में सरना सुप को पकड़वाकर धर्मेश एवं सरना माता का स्मरण करते हुए नये सरना सुप में रखे हुए चावल को पुराने सरना सुप में छिड़कर बैगा द्वारा तब तक प्रार्थना किया जाता है जब तक धांगर के उपर सरना माता सवार नहीं हो जाती। इस प्रकार निम्नांकित कार्यकारणीयों का चयन किया जाता है –

1. **पानी व्यवस्था** - पूजा के लिए शुद्ध पानी की व्यवस्था पनभरा द्वारा ग्रामवासियों के समक्ष खद्दी पर्व के पहले दिन किया जाता है। शुद्ध पानी के लिए खेतों के मध्य स्थित **चुंवा / डांड़ी** (कच्चा कुंवा) को पुरी तरह से साफ (पुराना पानी, किचड़ आादि) कर नया पानी आने पर पूजा में उपयोग किया जाता है। नया पानी आने पर बैगा चुंवा को टीका–सिन्दूर कर शुद्ध पानी उपलब्ध कराने का आग्रह करता है।


तुसा या चुंवा या डांडी (कच्चा कुंआ)


नेग अम्मों लाता हुआ पनभरा

2. **नेग अम्मो** - खद्दी पर्व के दिन भोर के समय **पनभरा** द्वारा साफ किये गये चुवां से नये मटके में पानी भरकर सरना स्थल में लाया जाता है। जिसको बैगा और पनभरा द्वारा मिलकर आयताकार स्थिति में रख दिया जाता है। इस प्रकिया से साल में होने वाले वर्शा की दिशा व मात्र से संबंधित समस्त स्थिति का पूर्वानुमान लगाया जाता है। अनुमानानुसार कृषि भूमि की तैयारी किया जाता है। इनमें विश्वास है कि रात्रिकालीन वर्षा से धान और दिन में होने वाली वर्षा से दलहन व तिलहन की उपज अच्छी होती है।

3. **बलि हेतु जीव की व्यवस्था** - बली दिये जाने वाले जीव की व्यवस्था ग्राम के जिम्मेदार व्यक्तियों द्वारा साथ मिलकर किया जाता है।

4. **पितर-पूर्वज की पूजा** - खद्दी पर्व के दिन सुबह परिवार मुखिया द्वारा स्नान उपरांत सरई फूल का श्रृंगार कर अन्य पूजा सामग्रियों को लेकर परिवारिक पितर–पूर्वज की आराधना एवं चाला पच्चो एवं धर्मेश की पूजा किया जाता है।

5. **तपावन की व्यवस्था** - बैगीन एवं कुछ अन्य जिम्मेदार महिलाओं द्वारा तपावन की व्यवस्था खद्दी पर्व के एक सप्ताह पूर्व तिथि निर्धारण के बाद किया जाता है।


तपावन/पवित्र पानी निकालता उरांव पुरूष


झरा/हड़िया पानी (पवित्र जल)

6. **सामूहिक लेटोभोज** - सरना स्थाल में सामूहिक लेटोभोज का आयोजन सरहुल पर्व में पूजा उपरांत किया जाता हैं। जिसमें समस्त देव–देवताओं को चढ़ाई गई बलि जीवों के मांस एवं चावल से तैयार किये गये भोजन को **लेटो भात** कहा जाता है। जिसे उपस्थित पुरूषों द्वारा सरना स्थल में ही ग्रहण किया जाता है। धर्मेश (निराकार भगवान) को चढ़ाई गई बली का सेवन केवल **बैगा द्वारा** ही किया जाता है। महिलाओं के लिये लेटोभात वर्जित होता है।

7. **खेखेल बेंजा** - खेखेल बेंजा का अर्थ भूमि विवाह है। जिसमें बैगीन प्रकृति की देवी **चाला पच्चो** एवं बैगा **बीड़ी बेलस** (सूर्य देव) का प्रतिरूप बनते हैं अर्थात् बैगा–बैगीन वर–वधू के रूप उपस्थित होते है। यह विवाह वैसे ही सम्पन्न कराये जाते हैं जैसे सामान्य उरांव वर–वधू का किया जाता है।

8. **प्रसाद वितरण** - सरना पूजा उपरांत बैगा द्वारा सरना माता में चढ़ाये गये धान को प्रत्येक ग्राम वासियों को तीन मुंठी दिया जाता है। जिसे ग्रामवासियों के द्वारा लेकर अपने–अपने धान की कोठी में छिंट दिया जाता हैं और बुवाई काल में उसी कोठी से धान बीज निकाल कर बुवाई कार्य प्रारंभ किया जाता हैं।


पूंप मेझरते हुए उरांव पुरूष

9. **पूंप मेझरना** - पूंप मेझरना का शाब्दिक अर्थ फूल खोसना होता है। सरना पूजा उपरांत बैगा द्वारा उपस्थित ग्रामवासियों को सरई फूल अर्पित किया जाता है। बैगा द्वारा सरई फूल ग्रामवासियों के सिर में पानी देते हुए खोंसा जाता है। औरतों में बैगीन द्वारा फूल खोसी का कार्य प्रारंभ किया जाता है। त्यौहार में समस्त ग्राम वासी एक–दूसरे को फूल खोंस कर सरहुल पर्व की बधाई देते है। इसे पूंप मेझरना कहा जाता है।

3.7 खद्दी/सरहुल पूजा सामग्री -

उरांव समुदाय द्वारा सरना पूजा के दौरान देवी–देवताओं में चढ़ाई जाने वाली सामग्रियां –

क्र	देवी-देवता	जीव व उसके रंग	बलि (चढ़ावा) वर्ष
1	धर्मेश	सफेद रंग की मुर्गा, बकरा या भेड़	प्रत्येक
2	सरना माता	कसरी, लाल मुर्गा	प्रत्येक
3	मृत पिता/पूर्वज	लाल, कसरी मुर्गा	प्रत्येक त्यौहर (पूजा)
4	दरहा–दशवाली	लाल, माला, भेड़, बकरी, भैंसा	3, 5 या 7
5	ग्राम देवी	लाल मुर्गा	प्रत्येक
6	चण्डी–चण्डियां	लाल, काला मुर्गा, काली पठिया	3, 5 या 7



बलि में चढ़ाई गई जीव

उपरोक्त जीवों की बली सरना पूजा के दौरान प्रतिवर्ष चढ़ाई जाती है। जिससे समुदाय का जनधन सुरक्षित रखा जा सके। इसके साथ ही अहंकारी, विनाशकारी, हानिकारक भुत–प्रेतों की भी पूजा–पाठ सम्पन्न की जाती है। जिसका कालावधि 3, 5 या 7 वर्ष की होती है। जिसमें समस्त ग्रामवासी भाग लेते हैं।

चढ़ावा सामग्री की व्यवस्था ग्राम के जिम्मेदार पुरूषों द्वारा मिलकर प्रत्येक घर से उपलब्धता अनुसार मुर्गा–मुर्गी आवश्यक रंग एकत्र किया जाता है।

महिलाओं के द्वारा तपावन या हड़िया पानी, नया घड़ा, तवा, टोकरी, छुरी, टिका–सिन्दूर, ढोल आदि का व्यवस्था किया जाता है। जिसके लिए बैगीन के साथ अन्य महिलायें थैला के साथ पैला लेकर प्रत्येक परिवार से धान, महुआ या रूपया एकत्र करती हैं।

3.8 खद्दी/सरहुल में पूजे जाने वाले प्रमुख देवी-देवता -

उरांव जनजाति में दो प्रकार के देवी–देवता पाये गये। सरना स्थाल में पूजे जाने वाले देव–देवता निम्नानुसार है :–

क्रमांक	नर्म (सालिन) स्वाभव	गर्म (तेज) स्वाभव
1	धर्मेश (निराकार भगवान)	पाठ–महादन
2	बीड़ी बेलस (सूर्यदेव)	दरहा–देशावली
3	सरना आयंग (माँ)	चण्डी–चण्डियॉ (जोंख़ (मूतरी), पेल्लों, पच्चों चण्डी
4	ग्राम देवी एवं मृत पिता/पूर्वज	सिमांत देवी–देवता

इस समुदाय द्वारा उपरोक्त देवी – देवताओं की पूजा–अर्चना निर्धारित पूजा सामग्रियों के साथ निर्धारित तिथि में सरना स्थाल पर किया जाता हैं।

3.9 सरना स्थाल में देवी-देवताओं की पूजा विधि-

यह समुदाय पूवजों व कुल देवी – देवताओं की अराधना अपने–अपने घरों में करता है। शेष देवी–देवताओं की पूजा–अर्चना मुख्य रूप से सरना स्थल में किया जाता है।



नृत्य करता उरांव समुदाय

1. **धर्मेश (निराकार भगवान)** - यह जनजाति निराकार प्रभू का उपासक है। साथ ही स्थानीय (जातिगत) देव–देवताओं का भी पूजा–अर्चना किया जाता है। इनमें विश्वास है कि सृष्टिकर्ता धर्मेश सर्वोशक्तिमान निराकार है। किंतु आवश्यकतानुसार (मानव उथान के लिये) कई बार धरती में विभिन्न रूपों में अवतरित हुए है। स्थानीय देवी–देवता इन्ही का रूप है। ये निराकार धर्मेश के अधीन उनके अगवाई में ही स्थानीय देवी–देवता प्राकृतिक संतुलन को बनाये रखने का काम करते है।

2. **सरना अयंग (माँ)** - सरना आयंग साल वृक्ष से दर्शन देकर अपने प्रियेजनों को पुकारा और निर्देश दिया कि प्रत्येक ग्रामों में उनकी (सरना मां) की स्थापना किया जाए और ग्राम सुरक्षा के लिए चंडी, ग्राम देवी, दरहा, महादन आदि ग्राम रक्षक की भी स्थापना किया जाए। प्रियजनों ने निर्देशानुसार प्रत्येक ग्राम में इनकी स्थापना किया। सरना मां ने निर्देश देकर पुनः साल वृक्ष में ही विलुप्त हो गई। इसी कारण से उरांव समुदाय साल वृक्ष को मंदिर मानकर इसके नीचे पूजा करता है। यह पूजा प्रत्येक वर्ष चैत तृतीय को खद्दी त्यौहार में किया जाता है। इसमें ग्राम मुखिया/बैगा द्वारा समस्त ग्रामवासियों की ओर से सरना मां की पूजा अर्चना किया जाता है। इन्हें सरना अयंग–बंगायो कहकर भी पुकारा जाता है। कुरुख बोली में अयंगों का अर्थ मां और बंगायो का अर्थ बाबा अर्थात् पिता होता है अर्थात आप ही हमारे मां–बाप है। सरना मां को सरना बुढ़िया झकरा पच्चों, चाला पच्चों, चाला आयंग, सरना बंगायों, वनदेवी आदि नामों से भी पुकारा जाता है। इनमें यह विश्वास है कि सरना माता समस्त प्राकृतिक घटकों को नियंत्रित करती है।


सरई पेड़ को जोहार करता उरांव समुदाय

खद्दी/सरहुल त्यौहार के समय सरना अयंग (मॉ) के पास सरना स्थल में निम्न अनुसार प्रार्थना किया जाता है –

हुदि चाला अयंग (पच्चों) निग्हैं नामे नू एएम कसरी ख़ेर चिआ लगदम।

एमन होरमारिन निके-सुके उइके,नाद-पाईत अम्बन धरआ नेकआ।।

एमन एकसानूम कालोम, कुदोम-नूंगोम अरा दुःख-दन्द नू बरओम।

आबारी एमन एरके अरा दुःख-दन्दन भोगता के चिःअके,

एकसानूम कालोम होले अच अम्बन चक्खाः नेकआ।।

अर्थ - हे सरना मां ये लीजिए आपको हम सब कसरी रंग का मुर्गा चढ़ावे में चढ़ा रहे हैं। आप हम सबके जीवन में अमन चैन बनाए रखना (रक्षा करना)। हमारे पास कोई भी भूत–प्रेत ना आ सके। हम सब अच्छे बुरे स्थल से घूम कर, हर दुख–तकलीफ में आपके चरण में आएंगे, तो हमारी दुखों का निवारण करना। घूमते–फिरते कभी हमारे पैरों में कांटे (दुख तकलीफ) ना चूभने देना।

यह पूजा प्रार्थना ग्राम बैगा/पुजार के द्वारा ही संपन्न किया जाता है। सरना माता से पूरे ग्राम वासियों के लिए खुशहाली और अमन–चैन के लिये प्रार्थना की जाती है ।

3. **मृत पूर्वज/पूर्वज** - उरांव समुदाय द्वारा देवता उसे माना जाता है जो उन्हें कुछ देता है। समुदाय अपने पूर्वजों को अपना कुल देवी–देवता मानता है। इनमें ऐसी मान्यता है, कि हमारी रक्षा करना कुल देवी–देवताओं का दायित्व है। इसी लिए इनके पूर्वज प्रार्थनाओं में प्रश्न के साथ–साथ क्रोध का भी उल्लेख मिलता है।

मृत पूर्वजों का आशय उन पूर्वजों से है जिनका संबंध (उल्लेख) उरांव उद्भव स्थल **हरदी नगर, रुईदास (रोहतासगढ़), पटना** में मिलता है। यह स्थान इनका गढ़ था। सरना पूजा में मृत पूर्वजों का पूजा अर्चना किया जाता है। जिसमें निम्नानुसार प्रार्थना किया जाता है–

हरदी नगर, रुईदास, पटना अरा ईयांता हूँ पचबल आलारों,

हूदि इन्ना परब गहि नामेनू निमागे असमा अरा झरा दिआ लगदम।

होरमर ख़टरके दरा ओनके-मोख़के दरा एमन दवले उईके,

परब दवले बितआ नेकआ।।



उरांव झण्डा

अर्थ :- हरदी नगर, रूईदास, पटना के मृत पूर्वजों और यहां (ग्राम) के पूर्वजगणों यह लीजिए आज हम सब पर्व–त्योहार के नाम पर आप सबको रोटी और हड़िया पानी दे रहे हैं। आप सब आपस में मिल–बांट कर खा–पी लेना। हम सभी को सुख–शांति और अमन–चैन से रखना। यह त्यौहार अच्छा से निपट जाए।

मृत पूर्वजों और पूर्वजों को चढ़ावे में चढ़ा प्रसाद को पुजारी उपस्थित लोगों में बांट देता है और बचा हड़िया पानी पंचामृत को स्वयं पीता है।

सरना में पितर/मृत पूर्वजों एवं पूर्वजों की पूजा पुजारी/बैगा के द्वारा किया जाता है। पूजा में चावल आटा से बनी हाथ ठोका तली हुई रोटी और हड़िया का तपावन पानी का भोग दिया जाता है।

पूजा विधि - सरना में पूजा स्थल को गोबर से लिप कर शुद्ध किया जाता है। इस स्थल पर साल के 3 पत्तों को उत्तर से दक्षिण दिशा में क्रमवार रखकर पत्तियों की लंबाई पूरब से पश्चिम दिशा में रखकर खप्पर में रखी आग पर धूप–धुवन देकर व साथ ही अगरबत्ती भी जला दिया जाता है। तत्पश्चात तीन रोटी और तपावन पानी कांसे की कटोरी/लोटें में रख कर पुजारी/बैगा द्वारा मृत पिता/पूर्वजों को स्मरण कर दक्षिण से उत्तर (दाएं से बाएं) की ओर तीन बार घुमाने के बाद पहला रोटी का टुकड़ों बीच के पत्ते में उसके बाद बाएं, उसके बाद दाहिने तीन बार चढ़ावा दिया जाता है। इसी प्रकार तपावन पानी भी पत्तियों में तीन–तीन बार दिया जाता है। चढ़ावे में चढ़ी रोटी को प्रसाद के रूप में पुजारी द्वारा उपस्थित समस्त सदस्यों को वितरित कर दिया जाता है। पुजारी स्वयं भी प्रसाद व तपावन को ग्रहण करता है। पहान द्वारा पूर्वजों को तपावन पानी पिलाते समय निम्नानुसार प्रार्थना किया जाता है :–

निमागे अकाय अम्म-ओनका अरा कूल कीड़ा रई,

औंगे एएन झरा ओन्तादन लू,लू,लू।

अर्थ :- आप लोगों को बहुत भुख–प्यास लगी होगी इसीलिये मैं आप लोगों को हड़िया पानी पिला रहा हूँ। लू, लू,लू शब्दों का तीन बार उच्चारण किया जाता है।


सरना स्थल (पूजा में) शुद्ध पानी चढ़ाते हुए बैगा

उरांव जनजाति द्वारा अपने प्रत्येक त्योहारों में पूर्वजों की पूजा की जाती है, और इसी विधि द्वारा पूर्वजों को पूजा संपन्न किया जाता है। उरांव जनजाति अपने पूर्वजों का गोत्र को कुल देवी–देवता मानते हैं। यह जनजाति अपने पूर्वजों के याद या आदर में खाना खाने व हड़िया पीने के पूर्व उनके नाम से दाल–चावल सब्जी का कुछ भाग व हड़िया पानी की कुछ बूंद जमीन पर अर्पित करने के उपरांत ही ग्रहण करता है। यह क्रिया मुखिया रूप से परिवार के पुरूष मुख्य द्वारा संपादित किया जाता है। इसका अनुकरण परिवार के युवकों द्वारा किया जाता है। यह प्रक्रिया आज भी प्रचलन में है। पूर्वजों/पितरों की पूजा–अर्चना प्रत्येक वर्ष जन्म, विवाह एवं मृत्यु, प्रत्येक पर्व–त्यौहार के साथ ही नया गांव बसाते/बनाते समय भी किया जाता है।

4. **पाठराजा, महादन, दरहा-देशावली** - उरांव समुदाय द्वारा सरना माँ के निर्देशानुसार ग्राम के रखवाली के लिए पाठ राजा, दरह–देशावली, महादन आदि देवताओं का ग्राम में स्थापना किया गया है। महादन की स्थापन ग्राम के दक्षिण दिशा के ऊंची जगह में किया जाता है। पाठ राजा, दरह–देशावली, महादन सभी चण्डी और अन्य सहायक देवताओं में प्रधान होते है। इनका कार्य ग्राम वासियों को बाहर से आने वाली विभिन्न विपत्तियों (आकाल, आफतों और भूत–प्रेतों के प्रकोपों) के आक्रमण से रक्षा करना होता हैं। पाठ पुरुष रूप में देवता एवं देशावली स्त्री रूप में देवी हैं। पाठ महादन की स्थापना ग्राम के किनारे ऊंची जगह में किया जाता है। जिससे वह बाहर से आने वाले दुष्ट आत्माओं, भूत–प्रेतों को सबसे पहले देखकर पहचान सके और अपने पहरेदारों/सहायकों (चण्डी–चण्डियों) जिनहें ग्राम के सीमाओं में तैनात चण्डियों को चौकन्ना कर सके। जिससे ग्राम और ग्राम वासियों को सुरक्षित रखा जा सके।


सरना में आबदा तिख़िल (अक्षत) चढ़ाते हुए बैगा


बैगा पूजा करते हुए

वर्ष में एक–दो बार सीमा बॉर्डर में तैनात चण्डियों की बैठक दरहा देशावली के दरबार में दुश्मनों के आक्रमण के संबंध में समीक्षा बैठक कर गहन विचार–विमर्श किया जाता है कि भविष्य में बाहरी आक्रमण से कैसे ग्राम वासियों को बचाया जा सकता है। समीक्षा बैठक के उपरांत दरहा देशावली के द्वारा आदेश दिया जाता है कि ग्राम की सीमाओं में तैनात चंडिया सुरक्षा के मामले में

सतर्क रहें। ग्राम वासियों के द्वारा सरना स्थल पर उनके लिए प्रत्येक वर्ष कसरी मुगा, प्रत्येक 3 वर्षों में भेड़, प्रत्येक 5 या 7 वर्षों में भैसा बलि में दिया जाता है। यह क्रिया प्रत्येक ग्राम में अलग–अलग होता है। इनको चढ़ावे में चढ़ने वाली जीवों की व्यवस्था एवं उसका व्यय का वहन दरहा खेत जोतने/कमाने वाले व्यक्ति के द्वारा किया जाता है। कभी–कभी इनकी पूजा–अर्चना ग्रामवासियों के द्वारा महामारी को शांत कराने हेतु महामारी के समय भी किया जाता है। महादन का मुख्य कार्य वर्षा कराना होता है। आकाल पड़ने पर उरॉव महिलाएं महादन स्थापित स्थान (पेड़, पत्थर या खुटा) पर जल अर्पित/चढ़ा कर वर्षा कराने की कामना करती है। ग्राम मुखिया द्वारा सरना स्थल पर पाठराजा, महादन, दरहा–देशावली को चढ़ावे में मुर्गा चढ़ाते (बलि) हुए निम्नानुसार प्रार्थना किया जाता है –

ओंदा दरहा-देशावली,

निंम्मागे एएम खेंसो खेंर चिआ लगदम।

एमन दवले उइके, एएम अकै दवले,

ख़द्दी मनाबःदम नेकआ।।

अर्थ :- हे दरहा–देशावली देवतागण आप के लिये हम लोग पहान के हाथों से लाल रंग की मुर्गा का चढ़ावा (बलि) चढ़ा रहें है। कृपया ग्रहन करें और हमलोगों को अमन–चैन से रखें। हमारा जीवन आनंदपूर्वक सरहुल मनाते हुए व्यतीत हो।

5. **चण्डी-चण्डियां** - उरांव ग्राम में उरांव समुदाय द्वारा स्थापित पाठ राजा, देशावली तथा महादन के पहरेदार/सैनिकों को चंडी–चण्डियां के नाम से पुकारा जाता है। चंडी–चण्डियों की तैनाती/स्थापना गांव के चारों दिशाओं/सीमाओं में ग्राम की सुरक्षा हेतु किया जाता है। इनकी स्थापना अलग–अलग प्रयोजनों/सिद्धियों के लिए किया जाता है। महादन–महादनिया समस्त पहरेदार/चंडी–चण्डियां का प्रमुख होता है। इनकी पूजा–अर्चना समुदाय के द्वारा अलग–अलग आयु वर्ग एवं स्त्री पुरुषों के द्वारा अलग अलग सिद्धयों के लिये किया जाता है, जो इस प्रकार है :–

क्र.	चंडी-चण्डियों के नाम	आराधक वर्ग	समय	उद्देश्य
1	पद्दा चंडी	पहान/बैगा ग्रामवासी द्वारा	मार्च–अप्रैल (खद्दी)	ग्राम सुरक्षा हेतु
2	जतरा चंडी	पहान/बैगा/पुजारी/ग्रामवासी द्वारा	जन.–फर. (जतरा)	अप्रत्याशित आपदाओं से सुरक्षा हेतु
3	जोंख़/मूत्र चंडी	नवयुविकों के द्वारा	फर.–मार्च (होली)	नवयुविकों की सुरक्षा हेतु
4	पेल्लों चंडी	नव युवतियों के द्वारा	प्रत्येक वर्ष	नव युवतियों की सुरक्षा हेतु
5	पच्चों चंडी	बुजुर्ग महिलाओं के द्वारा	प्रत्येक वर्ष	बुजुर्ग माहिलाओं की सुरक्षा हेतु
6	शेंदरा चंडी	युवकों के द्वारा	मार्च–अप्रैल (होली)	अच्छे शिकार के हेतु

समस्त चण्डियों का मुखिया महादन–महादनियां होता है। महादन के अधीन समस्त चंण्डिया अपना सुरक्षा कार्य का निष्पादन करते हैं। इनकी स्थापना ग्राम के चारों दिशाओं में किया जाता है।

3.10 खद्दी पर्व के दौरान किये जाने वाले गायन-वादन एवं नृत्य -

सरना पूजा पूर्ण होने के पश्चात् सर्वप्रथम बैगा घर वापसी करता हैं, बैगीन द्वारा उपस्थित ग्रामवासियों को हड़िया पानी के साथ सरई फूल दिया जाता है। जिसे पूंप मेझरना भी कहा जाता है, तत्पश्चात् बैगा–बैगीन के घर में ही उन्हीं के द्वारा नृत्य–संगीत का प्रारम्भ किया जाता है। ग्रामवासी इनके आंगन से नृत्य करते हुए अखड़ा (करम डाल को विस्थापित करने का पुनित स्थल) अथवा किसी छायादार पेड़ के नीचे नृत्य करते हैं, जो दिन–रात निरंतर चलती रहती है। खद्दी नृत्य निम्नानुसार होते हैं–

1. खद्दी
2. पाटा
3. लुजकी
4. टुण्टा



बैगा के द्वारा बैंगीन को सराई फूल देते हुए



सरहुल/खद्दी नृत्य करता उरांव समुदाय

खद्दी नृत्य में उपरोक्त नाम से ही गीत का गायन किया जाता है। नृत्य की शैली, गायन की राग एवं वादन के तान अलग–अलग होते हैं। इस पर्व में सभी आयु समूह के महिला–पुरूष मिलकर आनंद की अनुभूति लेते हैं। जिसमें सभी अपने पारंपरिक परिधान धारण कर साथ में नृत्य करते हैं।

1. खद्दी गीत-

सरहुल विवाह के समय - नैगा–नैगीन (बैगा–बैगीन) ख़द्दी विवाह के समय बैगीन अर्थात धरती (सरना मां) और आकाश (सूर्य देव) की शादी के संबंध में युवक–युवतियों के द्वारा निम्नानुसार गाना गाया जाता है –

चानमू चानमू नैगायो,

गोलर-बेलर लेक्ख़ाः बेजरा लगदय।

ख़द्दी पाईरी नैगायो,

गोलर-बेलर लेक्ख़ाः बेजरा लगदय।

अर्थ :- है सरना धर्म के धर्मगुरु आप सरहुल त्यौहार के सवेरे राजा महाराजाओं की तरह बन ठन कर शानो–शौकत से प्रत्येक वर्ष विवाह करते हो।



पारंपरिक परिधान/श्रृंगार में नृत्य करते हुए उरांव समुदाय

2. **पूर्वजों के याद में -** उरांव समुदाय द्वारा सरना मां और पूर्वजों को याद करके खुशी में निम्नानुसार गाना गाया जाता है :–

ले ले मुनू झरा देवान, बोथा झरा,
सैरे गोसांई सारेम, हैरे ख़द्दी मनोय,
हैरे फग्गूमानोय सारेम।। ....पुरुषो के द्वारा
रहड़ी चखेना गोसांई, झुड़ंगा चखेना।?
बरोय चखना गोसांई, खेसारी चखेना।
सारेम गोसोई सारेम।
हैरे ख़द्दी मनोय, हैरे फग्गू मनोय।..........महिलाओं के द्वरी

अर्थ :- पूर्वजों की याद में देवान (पूर्वज) ये लीजिए हड़िया मोनू (पहला पानी) झरा बाद में वह बोथा (दूसरी पानी) बार घटिया ही मिलेगा हम लोग खुशी–खुशी फागुन–ख़द्दी का त्यौहार मना रहे हैं। अरहर, झुरगा और खेसारी छाल की चखना लीजिए, हम लोग खुशी–खुशी फागुन–ख़द्दी का त्यौहार मना रहे हैं।



पारंपरिक परिधान में स्वागत नृत्य करता हुआ उरांव समुदाय

3. **धरती माता के लिए -** जब बसंत ऋतु आती है। सभी पेड़–पौधे नयी पत्तियों के साथ रंग बिरंगे मनमोहक फूलों और पत्तों से सजे होते हैं। उस समय धरती मां (सरना) दुल्हन की तरह सजी होती है। इस संबंध में निम्नानुसार गाना गाया जाता है –

इंदर पुंपन आयो मेझरकी,

भगाजोनी लेखा लवकारकी बरा लगदी ।।2।।

नौर पुर पूंपन आयों मेझरकी,

भगजोगनी लेखा लवकारकी बरा लगदी ।।2।।

अर्थ - हे धरती मां किस फूल से सज कर आई हो, जो भगजोगनी के समान चमक रही हो। सरई फूलों का श्रृंगार करके आई हो, भगजोगनी की तरह चमक रहे हो।



आधुनिक परिधान में खद्दी नृत्य करती हुई उरांव युवतियाँ

4. **चांद के लिए -** चांद के ऊपर नाव युवक–युवतियों के द्वारा सरहुल चांद के संबंध में निम्नानुसार बखान किया जाता है –

ख़द्दी चंदों एदा कोय,

कुल्ला लेक्खाः आरेग लगी ।।2।।

पाईरी बीरी एदा कोय,

कल्ला लेक्खाः आरेग लगी ।।2।।

अर्थ - सरहुल चांद दिखाई दिया जो छाता के समान चढ़ रहा है, सुबह के समय निकल कर छाता के समान खिलता हुआ चढ रहा है।

एन्देर चंदों भईया रें,

लेदेम लेदा तिलई दिम राई ।।2।।

ख़द्दी चंदों भईया रें,

लेदेम लेदा तिलई दिम राई ।।2।।

अर्थ - ये कौन सा चांद है भाई, जो तिलई फूल की तरह खिला हुआ है। यह सरहुल चांद है भाई, जो तलई एवं साल फूल की तरह खिला हुआ है।

5. **विवाहित महिला के लिए** - विवाह उपरांत ससुराल में सरहुल पर्व के समय अपनी जिम्मेदारियों की वजह से स्वतंत्रता पूर्वक जश्न नहीं मना पाती है। विवाहिता याद करती है कि मायके में किस तरह अपने जोड़ीदार साथियों के साथ स्वतंत्रता पूर्वक मनचाहे दिन—रात जश्न मनाती व आनंदित रहती थी। इसका अफसोस करके विवाहिता महिलाओं द्वारा निम्नानुसार गाना गाया जाता है —

ख़द्दी चंदों एएदा जगजगआ,

बेंजरका पेलो रसरसआ चींखा लगी।

हायरे पाईरी बारी ख़द्दी चंदों एएदा,

बेंजरका पेलो रसरसआ चींखा लगी।

अर्थ - सरहुल का चांद जगमगाते हुए निकल आया है, ब्याही गई लड़की फूट—फूट कर रो रही है। सुबह के समय सरहुल चांद निकला, ब्याही गई लड़की फूट—फूट कर रो रही है।

6. **पारंपरिक साड़ी** - पारंपरिक साड़ी के ऊपर निम्नानुसार गाना गाया जाता है —



पारंपरिक वेश-भूषा में नृत्य करती हुई उरांव महिलाएं

बिन बन्ना किचरी पेलो भेज्जा बीचि,
बन्ना किचरी पेलो उल्लम राई।
ख़द्दी पाईरी पेलो भेज्जा बीचि,
बन्ना किचरी पेलो उल्लम राई।

अर्थ - बिना डिजाइन (पारंपरिक परिधान) के साड़ी पहनी हुई लड़कियां सरहुल नाच रहे हैं और पारंपरिक परिधान पहनी हुई युवतियां घर के अंदर हैं। सुबह–सुबह बिना डिजाइन के साड़ी पहनकर यह सरहुल नाच रहे हैं किंतु पारंपरिक परिधान पहने हूई युवतिया घर के अंदर हैं।

7. **महुआ के संबंध में** - महुआ फूल के संबंध में गाए जाने वाले गीत निम्नानुसार है –

रिमरिम रआ बिड़आ लगी,
मदगी खातेरा लगी।
खातेरआ चिया भैया खातेरा चिआ हो,
पेलोगे पेसागे भार मना लागी।।

अर्थ - चिलचिलाती धूप पड़ रही है, महुआ का फूल गिर रहा है। हे भाई गिरने दो, महुआ इतना गिरा है कि युवति को चुनने (उठाने) में बहुत कठिनाई हो रही है।

8. **बार-बार मायके जाने पर** - विवाह उपरांत व्याहता द्वारा बार–बार मायके जाने पर इस प्रकार का गीत गाया जाता है –

बोंगा बोंगा पीलों नइहर कादी,
माय दुलार निग्हैं एवं उल्ला राओं।
मला रओय पेलो अडो निग्हयन खेदओन,
पंच रुपया डली एवं उल्ला राओं।


पारंपरिक वेश-भूषा में उरांव पुरूष

अर्थ - पति द्वारा पत्नी को बार–बार मायके जाने पर धमकाते हुए कहता है कि तुम बार–बार भाग–भाग कर मायका जाती हो, मां का लाड–प्यार तुम्हारे लिए कब तक रहेगा। अगर तुम ससुराल में नहीं रहोगी तो मैं तुम्हारे घर से लाए गए बैल–भैंसों को भगा दूंगा। मायका द्वारा दिया गया 5 रूपया कितने दिनों तक चलेगा।

9. **मौसमी पलायन -** उरांव युवको के द्वारा जब जीवन–निर्वाह के लिए मौसमी पलायन किया जाता है। ऐसी परिस्थिति में गाए जाने वाले गाने निम्नानुसार है –

निन भईया कोड़ा कादै,
निग्हैं जोड़ी मुक्कन तेगंर की काला।
धिरिज नाना गे भईया,
निन जोड़ी मुक्कन तेगंर की काला।

अर्थ - नवयुवक साथी द्वारा अपने साथी को सलाह दिया जाता है कि भाई आप रोजी–रोटी के लिए कोड़ा (बाहर) जा रहे हो। कृपया अपनी युगल जोड़ी को बता कर जाओ। बता कर जाने से आपके संगिनी के मन में सब्र (धीरज) बना रहेगा। वह परेशान नहीं होगी।

10. **सरहुल के संबंध -** सरहुल पर्व के संबंध में युवतियां कई बार चर्चा करती है। इस संबंध में निम्न अनुसार गीत गाया जाता है –

ख़द्दी- ख़द्दी बादी कोय पेलो,
ख़द्दी पईरी झड़ी बरआ लागी।
निंगा गे रिझ मला लागो,
ख़द्दी पईरी झड़ी बरआ लागी,
निंगा गे रिझ मला लागो।

अर्थ - सरहुल–सरहुल कहती हो सहेली सरहुल के सवेरे तो पानी बरस रहा है, बारिश के कारण तुम नृत्य नहीं कर पावोगी, आर्थत् तुम्हें सरहुल नृत्य करने में आनंद नहीं आएगा।

11. **यौवन अवस्था-युवक -** युवतियां अपने जवानी के समय के संबंध में विचार–विमर्श करते हैं। जिसे गाना के रूप में निम्नानुसार गाया जाता है –

ई समय का लागी भईया,
दोसर समय कीरों का माला।
हैरे डिंडा समय का लागी भईया,
दोसर समय कीरों का माला।


सरना स्थल में बेवरा कृषि का नमूना दिखाते हुए बैगा

अर्थ - हमारे सोने जैसा समय बीत रहा है, यह दुबारा वापस आएगा या नहीं। हमारा जवानी का समय व्यतित हो रहा है भाई, यह समय दोबारा वापस आएगा क्या।

12. **जोड़ीदार साथी के लिए -** युवक अपने गायन के बारे में साथियों से पूछता है कि मेरी आवाज कैसी है –

परता माईया पड़िकन जूड़ी ,
ख़ेख़ेल किईया मेंदरा का माला।
मेना गा मेंजकन जूड़ी,
आसिम का मलिदस बअदन

अर्थ - हे जोड़ीदार मैं पहाड़ के ऊपर जोर–जोर से गाना गा रहा था, आपको पर्वत के नीचे मेरा गाना सुनाई दिया क्या?जोड़ी भाई सुनाई तो दिया पर पहचान नहीं सका कि आप ही का आवाज हैं।

3.11 निषेध-

उरांव जनजाति में खद्दी पर्व के पूर्व निम्न प्राकृतिक खाद्य सामग्री का सेवन एवं कृषि कार्य किया जाना निषेध होता है, जैसेः–कोपल, नये कोमल पत्ते, जीरहुल फूल, मशरूम इत्यादि। इसी प्रकार खेतों की जोताई, खुदाई, खाद छिटाई और बुआई आदि निषेध होता है।



जलता हुआ बेवरा

3.12 उपसंहार -

यह प्रतिवेदन उरांव जनजाति की सरना उत्सव (खद्दी/सरहुल पर्व) के संबंध में मोनोग्राफ (विनिबंध) अध्ययन किया गया है। उरांव जनजाति के धार्मिक जीवन के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण किया गया है। विश्लेषण से ज्ञात होता है, कि उरांव समुदाय पर ईसाई धर्म का प्रभाव सबसे ज्यादा पड़ा है। धर्म के प्रभाव उपरांत जनजाति दो धर्म समूह में विभक्त हो गया। पहला–मूल धर्म को मानने वाले संसारी/संवसरिया/सौंवसरिया उरांव कहलाए। दूसरा–ईसाई धर्म को मानने/अपनाने वाले ईसाई/मिशन/क्रिश्चन उरांव कहलाए। आज भी यह दोनों धर्मावलंबी/मतावलंबी के उरांव समुदाय छत्तीसगढ़ राज्य में निवासरत है।

प्रारंभिक अध्याय में मोनोग्राफ अध्ययन से उरांव जनजाति के सरना उत्सव के संबंध में विवेचना किया गया हैं जिसमें अध्ययित जनजाति की उत्पत्ति, इतिहास एवं इनके प्रमुख देवी–देवता, आराधक, प्रार्थना, आत्मा व भूत प्रेत तथा पारंपरिक चिकित्सा उपचार का अध्ययन किया गया हैं साथ ही सरना पर्व का शाब्दिक अर्थ, इसके प्रकार, सरना दिवस का निर्धारण, पर्व दिवस का निर्धारण, पर्व की तैयारी, पूजे जाने वाले देवी–देवता, सरना स्थल में पूजित देवी–देवताओं की पूजा विधि एवं में सरना उत्सव में गाये जाने वाले



गायन आदि का विश्लेषण किया गया है।

उरांव जनजाति के सरना उत्सव का अध्ययन उपरांत ज्ञात होता है कि यह समुदाय निराकार भगवान के साथ ही साथ जातिगत देवी–देवताओं को भी मानता / उपासक है। जातिगत देवी – देवताओं में ज्यादातर निराकार तथा कुछ प्राकृतिक घटकों पर आधारित है। जिसे सकार (मूर्त) माना जा सकता है। इस समुदाय द्वार साक्षत देवी–देवताओं के रूप में सर्यदेव, धरती माता (सरना), सरई पेड़, करम पेड़, आदि का अराधना किया जाता हैं। उरांव समुदाय में सरना उत्सव का चलन आदिकाल से पीढ़ी दर पीढ़ी अलिखित रूप में निरंतर हस्तांतरित होते हुए चली आ रही है।

सरना उत्सव का लिखित इतिहास होने से आने वाली पीढ़ी और अनुसंधानकर्ताओं को इसे अध्ययन करने व समझन में सहयोग मिल सकेगा। उरांव जनजाति द्वारा सरहुल पर्व में सरना स्थल पर मुख्य पूजा–अर्चना किया जाता है। जिसे इनके प्रतीक के रूप में भी जाना जाता है। इसलिए उक्त स्थल को पुनीत स्थल के रूप में संरक्षित किया जाना उचित होगा।





संचालनालय, आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान

सेक्टर 24, नवा रायपुर अटल नगर, छत्तीसगढ़

Website: cgtrti.gov.in, E-mail: trti.cg@nic.in

Phone: 0771-2960530, Fax: 0771-2960531